॥ धर्मश्रीः सर्वमंगला ॥
ॐ
गीता परिवार
श्रीकृष्ण सेवा निधि
संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

धर्मश्री

संयुक्त अंक
जनवरी से जून २०२०

श्रीराम-कार्यार्थमिदं शरीरम्।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट (अयोध्या) कोषाध्यक्ष पद सेवा निमित्त अभिनंदन

सामुहिक हनुमान चालिसा पाठ अभियान
प्रेरणा स्थान
प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी

पू. स्वामीजी का नागरी सम्मान - नगर

गोविन्ददेव गिरि जी महाराज

महाराजश्री का अभिनंदन, कोलकाता

मा. श्री. गडकरीजी के साथ सभा, नागपुर

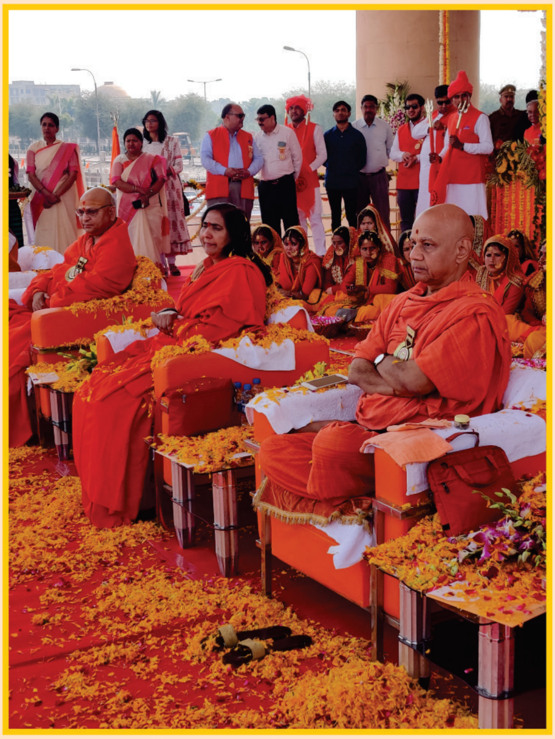

वनबंधु महासंगम, लखनऊ

१०८ फीट लंबी माला, लखनऊ

श्री गणेश मंदिर उद्घाटन, कोलकाता

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित
धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट: www.dharmashree.org

वर्ष १९ अंक १ चैत्र, युगाब्द ५१२१ संयुक्त अंक जनवरी से जून २०२०

संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
संपादक मंडल :
पं. अशोक पारीक
गिरीश डागा
शेखर वशिष्ठ
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
मुद्रक : **श्री. संजय भंडारे, पुणे**
स्वानंद प्रिंटर्स,
डेक्कन जिमखाना, पुणे- ४११००४
मो. नं.: ९८२३०१४८६२
ई-मेलःsvbhandare21@gmail.com

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. श्री रामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की प्रथम बैठक
६. 'ट्रस्ट' के पदाधिकारियों से प्रधानमंत्री की भेंट
७. प.पू. गुरुदेव के देशव्यापी भक्तों में हर्ष की लहर दौड़ गई!
११. सद्गुणों की सूची में दान
१४. मन की शक्ति से आरोग्य !
१६. ऐसी होगी नव-अयोध्या नगरी !
१७. अगाध श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास की प्रतीक : शबरी!
२१. श्रद्धांजलि : स्व. श्री जनार्दन पटवारी
२२. प. पू. गुरुदेव का ७१ वाँ जन्मोत्सव सानंद संपन्न!
२७. वेदविद्यालयों में प.पू. गुरुदेव का जन्मोत्सव धूम-धाम से सम्पन्न!
३१. भरोसो दृढ़ इन चरणन को
३४. संस्कार वाटिका-हजारों घर और परिवार
३८. आपदा अन्न सेवा
३९. गुरु-शिष्य संबंध

* आवश्यक सूचना *

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेदविद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें-

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

– संपादक

कृपया ध्यान दें।

आगामी अंक से 'धर्मश्री' अंक केवल ई-अंक के रूप में (PDF) प्रसिद्ध होने जा रहा है। यदि आप वह प्राप्त करना चाहते हैं तो कृपया आपका नाम, मोबाईल क्रमांक (Whats'aap No.) तथा ई-मेल आयडी 9423005027 इस क्रमांक पर दि. 01 सितंबर 2020 तक भेज दें।

– संपादक

गीताजी का चिन्तन हमें मृत्यु के भय से छुटकारा दिलाता है। -पूज्यपाद

संपादकीय

इस परिवर्तनशील संसार में निरंतर हमें सुख-दु:ख की घटनाओं का सामना करना पड़ता है। हम सबको भी इस प्रकार की अनुभूतियाँ इस बार प्राप्त हुई।

ब्रह्मा सावित्री वेदविद्यापीठ पुष्कर, (राज.) के प्रांगण को प्रथम बार गौरव प्राप्त हुआ। जहाँ प.पू. गुरुदेव द्वारा श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, पर आधारित श्रीरामकथा का आयोजन दिनांक २९ जनवरी से २७ जनवरी २०२० तक हुआ। इसी अवधि में २० जनवरी षट्तिला एकादशी के दिन तिथि के अनुसार तथा २५ जनवरी को परम पूज्य स्वामी श्री राघवाचार्य जी महाराज, रेवासाधाम एवं आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज, जयपुर की गरिमामयी उपस्थिति में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ ७२ वाँ जन्मोत्सव मनाया गया।

फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में ही एक अत्यंत आनंददायक वार्ता हम सबको प्राप्त हुई कि प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज को ''श्रीराम जन्म भूमि तीथ क्षेत्र ट्रस्ट'' के द्वारा कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया है।

चीन के वुहान शहर से प्रारम्भ होकर Covid 19 कोरोना नामक महामारी ने संपूर्ण विश्व में अपना प्रकोप फैला दिया और असंख्य लोगों को मृत्यु के मुख में धकेल दिया। पूरे विश्व का क्रियाकलाप इस अकस्मात आपत्ति से प्रभावित हो उठा। सभी ने आयुर्वेद, योग एवं निसर्ग के नियम पालन के महत्त्व को समझा। इस महामारी ने मनुष्य जाति को बाध्य कर दिया कि यदि उन्होंने प्रकृति के साथ तालमेल बैठाते हुए अपनी जीवनी शक्ति को सुदृढ नहीं किया तो मृत्यु के अवसर उनके बहुत समीप होंगे।

इस बार लॉकडाउन की वजह से सभी क्रियाकलाप बंद रहे और समस्त गतिविधियाँ अवरूद्ध हो गई। अत: इस बार संयुक्त अंक (जनवरी, फरवरी, मार्च) एवं (अप्रैल, मई, जून) प्रकाशित किया गया है।

धर्मश्री के इस अंक के यजमान

श्रीमान् भगतसिंहजी बनाफर, जबलपुर

साभिनंदन धन्यवाद!

प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज श्री रामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष निर्वाचित!

- ट्रस्ट के सदस्यों एवं पदाधिकारियों का निर्वाचन!
- मन्दिर निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री नृपेन्द्र मिश्रा होंगे!

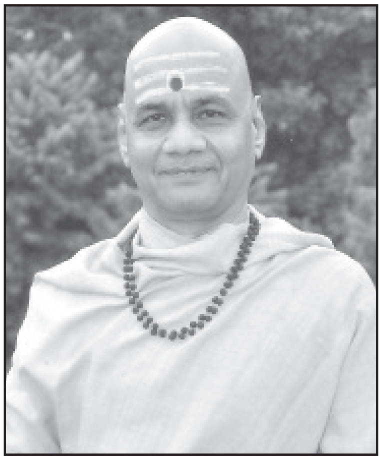

नई दिल्ली १९ फरवरी- श्री रामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र (ट्रस्ट) की प्रथम बैठक, आर-२०, ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली में संपन्न हुई; जिसमें सर्वप्रथम १५२८ ई. से लेकर वर्तमान तक, जिन असंख्य संत-महापुरुषों एवं रामभक्तों ने अपना जीवन अर्पित किया, उन सबके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित की गई। श्री नरेन्द्र मोदी तथा केन्द्र सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार की सजग भूमिका के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। तत्पश्चात् देश की संवैधानिक संस्थाओं तथा न्यायिक व्यवस्था के प्रति विश्वास प्रकट किया गया।

बैठक में पूज्य नृत्यगोपाल दास जी महाराज, अयोध्या धाम, अयोध्या एवं चम्पतरायजी, सामाजिक कार्यकर्ता, दिल्ली सर्व सम्मति से ट्रस्ट में नामित किये गये।

पू. नृत्यगोपाल दास जी महाराज को सर्वसम्मति से ट्रस्ट का अध्यक्ष-प्रबन्धक का दायित्व सौंपा गया। महासचिव का दायित्व श्री चम्पतराय जी को एवं कोषाध्यक्ष का दायित्व पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज, पुणे को सौंपा गया।

दिल्ली की फर्म वी. शंकर अय्यर एण्ड कम्पनी, रंजीत नगर, पटेल नगर, नई दिल्ली-११०००८ को ट्रस्ट के चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट के लिए नियुक्त किया गया है। वे ट्रस्ट के लेखा से संबन्धित सभी वैधानिक कार्य पूर्ण करेंगे।

ट्रस्ट की प्रथम बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये

बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की अयोध्या शाखा में ट्रस्ट का बैंक अकाउंट खोला जायेगा; जिसका संचालन स्वामी गोविंददेव गिरि जी, चम्पतराय जी, डॉ. अनिल कुमार मिश्र में से किन्हीं दो के संयुक्त हस्ताक्षरों से होगा।

श्री नृपेन्द्र मिश्रा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (आईएएस १९६७ बैच, उत्तर प्रदेश कैडर) को भवन निर्माण समिति का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

बैठक में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में अतिरिक्त सचिव, गृह विभाग श्री ज्ञानेश कुमार (आईएएस) १९८८ बैच, केरल कैडर), उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि अवनीश अवस्थी (आईएएस) १९८७ बैच, उत्तर प्रदेश कैडर), तथा जिलाधिकारी अयोध्या अनुज कुमार झा (आईएएस २००९ बैच, उत्तर प्रदेश कैडर) उपस्थित रहे। इनके अतिरिक्त, श्री के. पारासरन जी, स्वामी नृत्यगोपाल दास जी महाराज, स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज, युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज, स्वामी विश्वप्रसन्नतीर्थ जी महाराज, स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज, महंत दिनेन्द्र दास जी महाराज, विमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्र, डॉ. अनिल मिश्रा एवं कामेश्वर चौपाल इस प्रथम बैठक में उपस्थित रहे।

राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों से प्रधानमंत्री की भेंट

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट' के चार पदाधिकारियों यथा अध्यक्ष पू. महंत नृत्यगोपाल दासजी महाराज, महासचिव श्री चंपतराय जी, कोषाध्यक्ष आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज एवं सुप्रीम कोर्ट में जन्मभूमि के वकील एवम् अब सदस्य श्री के. परासरन से अपने निवास स्थान पर भेंट की तथा सभी को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया।

बैठक में ट्रस्ट के अध्यक्ष पू.नृत्यगोपाल दासजी महाराज ने उन्हें चुनरी भेंट की तथा भव्य राम मंदिर के शिलान्यास के लिए अयोध्या आने का निमंत्रण दिया जिसे प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया।

ज्ञातव्य है कि राम मन्दिर का निर्माण कार्य तय समय-सीमा के भीतर ही सम्पन्न होगा। निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री नृपेन्द्र मिश्र ने इस पर कार्य करना आरम्भ कर दिया है। इस हेतु वे ट्रस्ट के पदाधिकारियों से भेंट कर अग्रिम कार्य योजना पर विचार करेंगे।

आशा की जाती है कि विलम्ब से ही सही किन्तु अब राम मन्दिर अत्यन्त भव्य बनेगा। इसी के साथ अयोध्या में भी सभी अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवायी जावेंगी।

' वेदश्री तपोवन' के उद्घाटन हेतु निमंत्रण!

इसी अवसर पर पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज ने प्रधानमंत्रीजी को महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा संपूर्ण देश में कार्यरत ३४ वेदविद्यालयों द्वारा की जा रही वेद सेवाओं से अवगत कराते हुए 'प्रतिष्ठान' द्वारा वेद, वेदांगों के अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य हेतु शीघ्र प्रारम्भ होने वाले महत्त्वाकांक्षी प्रकल्प 'वेदश्री तपोवन' के उद्घाटन हेतु सादर निमंत्रण दिया। प्रधानमंत्री महोदय ने इस वेद सेवा कार्य की प्रशंसा की तथा उद्घाटन हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की।

ज्ञातव्य है कि उक्त 'वेदश्री तपोवन' हेतु आलंदी के निकट १४ एकड़ भूमि पर विद्यापीठ, छात्रावास, विशाल पुस्तकालय, म्यूजियम, योग साधना केन्द्र, कुलपतिनिवास, सभास्थान, रमणीक उद्यान, गौशाला आदि का निर्माणकार्य युद्धस्तर पर चल रहा है।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट
के कोषाध्यक्ष
परम पूज्य

प.पू. गुरुदेव के देशव्यापी भक्तों में हर्ष की लहर दौड़ गई!

राम मन्दिर निर्माण से देश का 'वास्तु' बदलेगा और विश्व में सम्मान बढ़ेगा!

– पू. स्वामी जी महाराज

राष्ट्रसंत परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज के 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट' के स्थाई सदस्य एवं कोषाध्यक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर निर्वाचित किये जाने के समाचारों से पू. गुरुदेव के देशव्यापी भक्तों में हर्ष की लहर दौड़ गई। आपका कई नगरों में भव्य सम्मान किया गया तथा विभिन्न प्रांतों से अनेक संतों, राजनेताओं तथा भक्तों ने बधाई संदेश भेज कर अपना हर्ष व्यक्त किया। साथ ही कई समाचार पत्रों ने आपके साक्षात्कार भी प्रकाशित किए। समाचार लिखने तक प्राप्त जानकारी का सार– संक्षेप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

ज्ञातव्य है कि दिनांक २१ फरवरी को शिवरात्रि पर्व पर आपके पुष्कर पधारने पर, ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में अध्यक्ष, श्रीआनन्दजी राठी, उपाध्यक्ष, श्रीरामावतार जाजू, सचिव, श्री संदीप झंवर एवं कोषाध्यक्ष, श्री अशोक कालानी के साथ ही अजमेर के प्रमुख व्यवसायियों, प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा आपका २१किलो गुलाब के फूलों की माला पहना कर सम्मान किया तथा आपको हार्दिक बधाइयाँ दी गईं। इसी अवसर पर अन्य संस्थाओं द्वारा भी आपका सम्मान किया गया।

इस अवसर पर महाराजश्री ने अपने मनोभाव व्यक्त करते हुए कहा कि– अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बनने से देश का 'वास्तु' बदलेगा। फलस्वरूप, विश्व में देश

के गौरव में वृद्धि होगी। आगे आपने कहा कि प्रधानमंत्री, श्री मोदी जी भी राम मंदिर निर्माण को लेकर काफी उत्साहित हैं। उन्होंने दिनांक २०जनवरी को ट्रस्ट के पदाधिकारियों के साथ संपन्न बैठक में राम मंदिर को अत्यंत भव्य बनाने का आग्रह किया है।

ज्ञात हो कि मंदिर निर्माण कार्य श्री नृपेंद्र मिश्रा की अध्यक्षता में गठित निर्माण –समिति द्वारा तथा संसाधन ट्रस्ट द्वारा जुटाया जाएगा। आपने इस महत्त्वपूर्ण ट्रस्ट में कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी नियुक्ति को भगवान श्रीराम की ही कृपा माना है।

जयपुर में सम्मानः

मंदिर भव्य एवं प्रचारित रूप से अधिक विशाल होगा!

जयपुर में दिनांक २३ जनवरी को विश्व हिंदू परिषद तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए महाराजश्री ने कहा, ‘‘ विगत दो दशकों से प्रसारित, राम मंदिर के स्वरुप से और भी अधिक विशाल एवं भव्य होगा। यह निर्माण कार्य ढाई से तीन वर्ष की अवधि में पूर्ण हो जाएगा।’’

ज्ञात हो कि मंदिर का निर्माण जन सहयोग से होगा। इस हेतु ट्रस्ट का अयोध्या के ‘स्टेट बैंक ऑफ इंडिया’ में खाता खुलवाया जा रहा है जो सर्वश्री चम्पतराय, महामंत्री, पू.स्वामीश्री गोविंददेव गिरिजी महाराज, कोषाध्यक्ष तथा डॉ. अनिल कुमार मिश्र के हस्ताक्षरों से खुलेगा एवं इनमें से किन्हीं दो व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से संचालित होगा। महाराजश्री ने समस्त देशवासियों से अपील की कि वे मंदिर निर्माण हेतु यथाशक्ति सहयोग करें। आपने यह भी बताया कि श्री नृपेंद्र मिश्र की अध्यक्षता में गठित निर्माण–समिति मन्दिर का निर्माण करवाएगी।

एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि राम मंदिर शिलान्यास एवं भूमि पूजन की तिथि अगली बैठक में निश्चित की जाएगी, जो शीघ्र ही आयोजित होगी और इसी बैठक में मंदिर का स्वरुप भी निर्धारित हो जायेगा।

समारोह में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख श्रीसावंत रंजन, विहिप के संरक्षक श्री दामोदर दास मोदी के साथ ही विहिप के ही सर्वश्री सुरेश उपाध्याय, राजाराम, किशोरी लाल मीणा तथा श्री रामसिंह उपस्थित थे; जबकि भाजपा की ओर से पूर्व मंत्री अरुण चतुर्वेदी, पूर्व विधायक श्री मोहन लाल गुप्ता, श्री अरुण अग्रवाल व अन्य सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

अहमदाबाद में संपन्न सम्मान

अहमदाबाद के दाधीच समाज में प. पू. महाराजश्री के ‘राम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट’ में कोषाध्यक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर निर्वाचित होने पर अत्यधिक हर्ष एवं भारी उत्साह व्याप्त हो गया। दिनाक २८ फरवरी को आपके अहमदाबाद प्रवास में सैंकड़ों की संख्या में एकत्र श्रद्धालुओं द्वारा ढोल–नगाड़ों एवं भारी जयकारों के साथ बापूनगर में श्री रायचंदजी दायमा के नेतृत्व में आपकी अगुवाई की गई। आपके सम्मान में आयोजित इस स्वागत समारोह में अहमदाबाद दाधीच समाज एवं अन्य गणमान्य लोगों की भारी संख्या में उपस्थिति रही।

स्वागत कार्यक्रम में विधायक श्रीवल्लभ भाई काकड़िया एवं श्री बाबूलालजी लूणिया ने आपको माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ा कर सम्मानित किया तथा आशा व्यक्त की कि अब शीघ्र ही भव्य मन्दिर का निर्माण पूरा होगा तथा करोड़ों हिंदुओं के आराध्य रामलला उसमें विराज कर उनकी अभिलाषा पूर्ण करेंगे।

कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक श्री रायचंद जी दायमा एवं उनके परिवार ने प.पू. गुरुदेव का विधि विधान पूर्वक पूजन किया तथा आशीर्वाद प्राप्त कर धन्य हुआ।

समारोह में गुजरात दाधीच परिषद के समस्त पदाधिकारीगण, अध्यक्ष, श्रीदेवेंद्रजी शास्त्री, महामंत्री, श्री अशोकजी दायमा, शांतिलालजी ओझा, हरिशंकरजी पलोड, अजयजी शर्मा, जयजी आचार्य, सुरेशजी व्यास, ओमकार जी दायमा, रामकुमार जी, गिरिजा शंकर जोशी आदि अनेक गणमान्य लोगों ने सपरिवार भाग लिया। इस अवसर पर दाधीच परिषद की ओर से प.पू.गुरुदेव को – राम दरबार की एक भव्य झांकी– भेंट की गई।

गुजराती में दिया आशीर्वाद !

प.पू. महाराजश्री ने कार्यक्रम में अपने मनोभाव, अप्रत्याशित रूप से गुजराती भाषा में व्यक्त करते हुए कहा कि–उनकी ट्रस्ट में कोषाध्यक्ष के पद पर नियुक्ति को वे भगवान श्रीराम का, उन पर आशीर्वाद मानते हैं। आगे आपने 'राम जन्मभूमि न्यास' के बारे में सभी आवश्यक जानकारियाँ प्रदान कर कृतार्थ किया। तथा लोगों को आश्वस्त किया कि रामलला का मंदिर अत्यधिक भव्य एवं विशाल होगा। इस पर वातावरण में 'जयश्री राम' का भारी उद्घोष गूंज उठा। सम्मान समारोह का सफल संचालन, श्री अशोक दायमा एवं श्री दिलीप दायमा द्वारा किया गया। अंत में सभी भक्तों ने अल्पाहार प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया।

पानीपत में संपन्न सम्मान

महाराज श्री का दिनांक २६ फरवरी को पानीपत पहुंचने पर अंसल सुशांत सिटी में आयोजित एक भव्य समारोह में स्वागत किया गया। इसमें पानीपत के अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न शहरों की कई धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं व समाजसेवियों ने भाग लेकर आपका अभिनंदन किया। इस अवसर पर महाराज श्री ने देश के पूर्ण विकास हेतु भौतिक उन्नति के साथ ही वहां के नागरिकों में राष्ट्रभक्ति के साथ–साथ भगवद्भक्ति को भी आवश्यक बताया। आपने आगे राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि ट्रस्ट का कार्यालय शीघ्र ही अयोध्या में स्थापित होगा तथा आर्थिक पारदर्शिता को ध्यान में रखते हुए सारा लेन–देन ऑनलाइन किया जाएगा। यह भी आपने बताया कि मंदिर का निर्माण पूर्व निर्धारित प्रारूप के अनुसार ही किया जायेगा; किंतु जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इसे विशाल एवं भव्य स्वरूप दिया जायेगा। महाराजश्री ने आशा व्यक्त की कि मंदिर निर्माण का कार्य ढाई से तीन वर्ष में पूर्ण हो जावेगा।

वेदश्री तपोवन संकल्प-पत्र

वेदश्री तपोवन एक दृष्टिक्षेप में

- १४ एकड़ की प्राकृति पार्श्वभूमि, इंद्रायणी नदीतट के सान्निध्य में।
- विशाल वेदांग, वेदार्थ एवं वेदान्त विद्यापीठ।
- आधुनिक वैज्ञानिक सुविधाओं से युक्त अनुसंधान व्यवस्था।
- १२० वरिष्ठ छात्रों एवं अनुसंधान कर्ताओं हेतु छात्रावास।
- मुख्य भवन में वैदिक वस्तु-संग्रहालय, ग्रंथालय, वाचनकक्ष, संगणक कक्ष।
- यज्ञशाला।
- ध्यानमंडप।
- पुष्करिणी।
- गौशाला।
- अध्यापक निवास।
- संगीत कक्ष।
- अतिथि निवास।
- कुलपति निवास।
- रमणीय उद्यान।
- विस्तीर्ण सभागार।
- आधुनिक सुविधायुक्त कार्यालय।
- खुला सभास्थान
- भोजनगृह।
- योग साधना केंद्र।
- भारतीय संस्कारपीठ।
- बालक, युवा एवं वयस्कों हेतु संस्कार/साधना शिविर सुविधा।

वेदश्री तपोवन में संकल्पित कार्य...

- वेदविषयक गहन अनुसंधान
- व्याकरणादि छह वेदांगों का अध्ययन-अध्यापन।
- विदेशी विद्वानों द्वारा विकृत किये गये वेदमंत्रों के अर्थ का निर्धारण।
- वेद के सर्वोच्च रहस्य-वेदांत का अध्ययन।
- मंत्रविद्या का सप्रयोग अध्ययन।
- सामूहिक राष्ट्र कल्याणार्थ अनुष्ठान।
- वैदिक प्रयोगों के रूप में यज्ञ-यागादि आयोजन।
- स्वास्थ्यरक्षण तथा व्याधिनिवारण हेतु योग-आयुर्वेद विषयक अध्ययन एवं अनुसंधान।
- बालक-बालिकाएँ तथा जन-सामान्यों हेतु संस्कार सुविधा।
- वैदिक विशेषज्ञों हेतु संगोष्ठि, कार्यशाला।
- वैदिक ज्ञान के प्रचारार्थ ग्रंथ प्रकाशन
- आदर्श वैदिक जीवनप्रणालि हेतु मार्गदर्शक विविध शिविर

सभी वैधानिक एवं शासकीय अनुमतियाँ प्राप्त कर निर्माणकार्य प्रारंभ हो चुका है।

प्रकल्प की विशेषताएँ

- **पर्यावरण अनुकूल 1 सौर ऊर्जा, पर्जन्य-जल, वायु-ऊर्जा का अधिकतम प्रयोग।**
- **जल के यथासंभव पुनः प्रयोगार्थ शुद्धीकरण व्यवस्था।**
- **रासायनिक खाद एवं औषधी प्रयोग से मुक्त।**

दैवासुर संपद् विभाग योग (पाँच)

सद्गुणों की सूची में दान

''दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्''

हर व्यक्ति जो अपने जीवन का उन्नयन करना चाहता है और सभी प्रकार की उलझनों से बाहर निकल कर, इस मानव शरीर का सर्वोत्तम उपयोग करना चाहता है, उसके लिए भगवद्गीता अमृतोपदेश है।इसी उपदेश का सार हम लोग देख रहे हैं।आखिर भगवान पूरी गीता का उपदेश करके भी, हमें किस प्रकार से घड़ना चाहते हैं? यह बात भगवान यहाँ बतलाते हैं। ये हम लोगों के अपने जीवन के उन्नयन के लिए अत्यंत उपयोगी सूत्र हैं।

श्रीभगवान ने कहा –

''मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पांडव''। अरे, अर्जुन!.. इन सारे लक्षणों के साथ ही तुम्हारा जन्म हुआ है, ये सब गुण तुम में हैं।'' इसीलिए भगवान अर्जुन को चाहते हैं। अगर हम भी भगवान के मन में बसना चाहें, तो हमें भी ये गुण स्वयं में लाने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए ये गुण अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

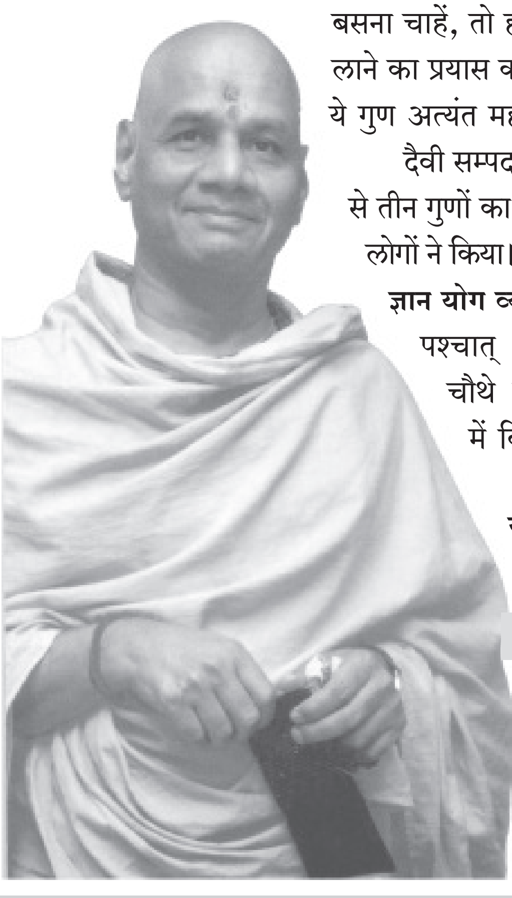

दैवी सम्पदा के इन २६ सद्गुणों में से तीन गुणों का थोड़ा अवलोकन हम लोगों ने किया। **''अभयं सत्त्वसंशुद्धिः ज्ञान योग व्यवस्थितिः''**। इसके पश्चात् अब हम इनसे आगे चौथे सद्गुण 'दान' के विषय में विचार करेंगे।

''दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्''

दान

दैवी संपद् का यह एक बड़ा सुंदर लक्षण है। दान का अर्थ है, देना। पू. गुरुदेव कहते हैं–

जीवन में एक बात ध्यान में रखना, जो देते रहता है, वो देव बनता है। इसलिए मनुष्य को निरंतर यह विचार करना चाहिए कि मैं क्या दे सकता हूं? ...लेते रहना, ये हमारी नियति है; क्योंकि लिए बिना हम अपना जीवन आगे बढ़ा ही नहीं सकते। माता-पिता से जन्म पाया, माता-पिता हमारा पालन नहीं करते, तो हम क्या बन सकते थे? हमारे अध्यापकों ने हमें प्रेम से नहीं पढ़ाया होता तो हमारा जीवन कैसा होता? इतना ही नहीं, समाज की अनेक संस्थाओं से हमने कुछ ना कुछ लिया, तब जाकर आज हम कुछ बन पाए हैं।

आदान काल और प्रदान काल

मनुष्य के जीवन में दो काल होते हैं। जीवन के आरम्भ में आता है, 'आदान का काल' और उसके पश्चात् का समय होता है– 'प्रदान का काल'। आदान करने में हिचकिचाहट करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि जो ब्रह्मचारी है, जो अभी तक पढ़ रहा है, जो अपने जीवन के निर्माण में लगा हुआ है, वह कहीं न कहीं से प्राप्त साधनों का उपयोग करके अपने लिए अनुकूलता

प्राप्त नहीं करेगा, तो अपने जीवन को कैसे बनाएगा? इसलिए जब आदान-काल होता है, तो उसमें हम लेते ही रहते हैं।

गलती तब होती है, जब लेकर के मैंने अपना जीवन बना लिया, तो इनका ऋण मुझ पर होगा। अब ये ऋण चुकाने की, देने की बारी आई, तब यदि मैंने अपना हाथ खींच लिया, तब तो मैं चोर हो गया।

भगवान ने भगवद्‌गीता में उसको चोर कहा है। ' यो भुङ्क्ते स्तेन एव स:'- (३/१२) स्तेन का अर्थ है – चोर। आदान करने का काल मेरा समाप्त हो गया। अब मैं अपने पग पर खड़ा हो गया, केवल खड़ा ही नहीं हुआ, अब मैं सिद्ध हो गया, तो अब मुझे प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहिए। और इसी 'प्रदान' को यहाँ पर कहा है, दान!

दान अर्थात संविभाग

देने के अर्थ में जब हम 'दान' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो उसके भाव भी समझ लीजिएगा। एक है दाता और एक है ग्रहिता । दान देने वाले को दाता कहते हैं और दान लेने वाले को ग्रहिता कहते हैं। कभी-कभी यहाँ, इस प्रकार का भाव निर्माण हो जाता है कि – देने वाला अपने-आप को बड़ा मानने लगता है और लेने वाला अपने को छोटा! जहाँ कहीं पर, इस प्रकार का भाव निर्माण हुआ, वहीं दान, शुद्ध-दान नहीं रहता है।

दान देने वाले को दाता कहते हैं और दान लेने वाले को ग्रहिता कहते हैं। कभी-कभी यहाँ, इस प्रकार का भाव निर्माण हो जाता है कि - देने वाला अपने-आप को बड़ा मानने लगता है और लेने वाला अपने को छोटा! जहाँ कहीं पर, इस प्रकार का भाव निर्माण हुआ, वहीं दान, शुद्ध-दान नहीं रहता है।

आदि शंकराचार्य जी महाराज 'दान' शब्द का अर्थ करते समय अत्यंत सुंदर शब्द का प्रयोग करते हैं।वे दान को 'संविभाग'-Its just sharing के रूप में लेते हैं। अर्थात, मेरे पास कुछ है, तो मुझे लोगों के साथ 'शेयर' करना चाहिए। शेयर करना यह शब्द आप लोग जानते हैं। शेयरिंग करने में या 'संविभाग' करने में, (यह शब्द श्रीमद्‌भागवत में भी आया है, वहां धर्म के लक्षण बताते हुए कहा है- 'अन्यात् त्यागे संविभाग:। यहाँ दान शब्द का नही, अपितु 'संविभाग' शब्द का प्रयोग किया गया है। अर्थात, आपके पास जो कुछ है, उसका आपको अकेले भोग नहीं करना चाहिए। अपने आस-पास जिन्हें आवश्यकता है और कदाचित आपसे अधिक आवश्यकता है, उनके साथ शेयर करने की भूमिका से, अपना कर्तव्य मान कर, देना चाहिए।- मैंने दान किया है, मैं बड़ा हूँ। तुमने लिया है, तुम छोटे हो! ऐसा 'अहं' मन में आते ही, वह दान तो है; लेकिन वह 'तामस-दान' हो जाएगा। अर्थात, वह दान हल्के दर्जे का हो जाएगा।

इसीलिए हमारे यहां साधुओं को, ब्रह्मचारियों को, संतों को जब हम दान देते हैं, तो साथ ही उन्हें प्रणाम भी करते हैं! प्रणाम इसलिए करते हैं कि उन्होंने दान लेकर हमें धर्मपालन का अवसर प्रदान किया। ये कितनी ऊँची बात है! लेनेवाला नहीं; पर देने वाला देकर कृतार्थ अनुभव कर रहा है।

दैवी प्रकृति का व्यक्ति, देने का व्यसनी बन जाता है। उसे लगता है, मुझे देते ही रहना चाहिए। भगवान ने मुझे दिया है, उनकी कृपा से आया, मैंने जो पुरुषार्थ किया, उसमें भी उनकी ही कृपा है। अब मुझे मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद जो भी है, उसका बंटवारा करना चाहिए। उसे लोगों में बांट देना चाहिए। 'दानं दमश्च यज्ञश्च'।

दान के प्रकार

१. अर्थ दान। ऊपर जो दान शब्द आया है, उसको आप केवल

पर दान की भी अनेक श्रेणियां होती हैं। १.मेरे पास अधिक है, मुझे देना चाहिए, यहां तो हो गई **'शेयरिंग'** की भावना। २.पर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मेरे पास मेरी आवश्यकता जितना ही है अथवा उससे भी कम है, लेकिन सामने वाले की आवश्यकता वास्तव में मुझसे भी अधिक genuine है, वास्तविक हैं, तो भी मैं उसे कहीं से व्यवस्था करके दे देता हूँ। कबीरदास जी के पुत्र कमाल को कर्जा लेकर भी लोगों की सहायता करने की आदत थी। ये है ''**डेडिकेशन**''! यह शेयरिंग से भी बड़ा दान है।

'अर्थ' के रूप में ही मत लीजिए। अर्थ का दान भी महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि अर्थ ही जीवन की अत्यंत महत्त्वपूर्ण शक्ति है। अर्थ के अभाव में अनेक कलियाँ फूल होने से पहले ही मुरझा जाती हैं। लोग अपने जीवन को बना ही नहीं सकते। उस समय की, उसकी जो भी आवश्यकता है, वह अर्थ के बिना पूरी नहीं हुई और वह आगे बढ़ नहीं पाया, उसका जीवन वहीं पर मुरझा गया। ऐसे कितने ही प्रसंग आपने सुने होंगे। इसलिए द्रव्य का दान, अपना एक विशेष महत्त्व रखता है। पर दान की भी अनेक श्रेणियाँ होती हैं। १) मेरे पास अधिक है, मुझे देना चाहिए, यहां तो हो गई **'शेयरिंग'** की भावना। २) पर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मेरे पास मेरी आवश्यकता जितना ही है अथवा उससे भी कम है, लेकिन सामने वाले की आवश्यकता वास्तव में मुझसे भी अधिक genuine है, वास्तविक हैं, तो भी मैं उसे कहीं से व्यवस्था करके दे देता हूँ। कबीरदास जी के पुत्र कमाल को कर्जा लेकर भी लोगों की सहायता करने की आदत थी। ये है ''**डेडिकेशन**''! यह शेयरिंग से भी बड़ा दान है।

पू. गुरुदेव आगे कहते हैं–

''मैंने स्वयं अपने जीवन में ऐसे लोगों को देखा है कि जिनके पास, देखा जाये तो कुछ है नहीं; लेकिन दान करते समय वह इतना खुलकर के कैसे करते हैं? सारे प्रसंग कहने लगूं, तो दान ही एक अध्याय हो जाएगा। एक घटना उदाहरण स्वरूप बताता हूँ। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का जो काम खड़ा रहा, वह दान पर ही खड़ा रहा। और ऐसे-ऐसे लोगों के सहारे खड़ा रहा है, जिनके पास एक समय इकठ्ठे ग्यारह सौ रुपए भी नहीं थे। ऐसा ही एक वह सज्जन सुनार तो मुझे आज भी याद है, रोज याद आता है। वह रोता हुआ खड़ा था मेरे सामने, ''महाराज, अभी मेरे से ये ३०० रुपये ले लो, आगे इसी तरह थोड़े-थोड़े करके एक साल में मैं ग्यारह सौ रुपए जमा करा दूँगा।''.. फटे कपड़े, एकदम सादा, मजदूरी करने वाला सज्जन सुनार। मैं तो उसे मना रहा था कि तुम यह सोच क्यों रहे हो। तुमसे लेने की मेरी इच्छा नहीं है। वह कहता है काम करते-करते, जब मैंने बालकों का वेदपाठ सुना, तो मुझे भी कुछ देने की इच्छा हुई। वहीं रहने वाले एक दूसरे आदमी ने जब पूरी बात सुनी तो कहा, '' महाराज, यह हमारे गांव का बड़ा सज्जन सुनार है। उसने उन सज्जन से कहा,'' आप ये ग्यारह सौ रुपए लो और रसीद कटवा लो, मुझे गांव में जैसे-जैसे सुविधा हो लौटाते रहना। परम संतोष से भरा उसका खिला हुआ चेहरा मुझे आज भी याद है।''

देखने की बात यह है कि यह शेयरिंग नहीं, ये 'डेडिकेशन' है, समर्पण है । इसी प्रकार राजा शिवि द्वारा बाज से कबूतर की रक्षा हेतु, स्वयं के शरीर में से मांस काट कर देने की त्यागपूर्ण भावना के पीछे हमारी संस्कृति के मूल सूत्र छिपे हैं, उन्हें समझिये। यहां उन्हें कबूतर की प्राण रक्षा अधिक आवश्यक लगी है।

ज्ञानदान

विद्या का दान भी बड़ा दान है। हम ऐसे गुरु के पास पढ़े हैं, मुझे तो आज के अध्यापकों को देखकर

(...शेष पृष्ठ १५ पर)

मन की शक्ति से आरोग्य!

वेद–प्रदीप

प्रकृति का यह अद्भुत नियम है कि एकाग्र चित्त से की हुई प्रबल भावना, वस्तु या अवयव पर अनुकूल परिणाम करती है। शर्त इतनीसी ही होती है कि भावना एकाग्रता के साथ एवं रोज-रोज दीर्घ काल तक बिना भूले की जानी चाहिए।

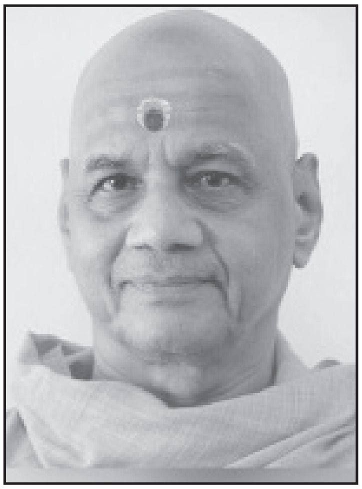

उत्तम व्यक्तित्व में शारीरिक आरोग्य, इंद्रियों की क्षमता एवं मनोबल का बहुत बड़ा स्थान होता है। व्यक्तित्व के प्रति सजग रहने वाले लोग आरोग्यशास्त्र के मार्गदर्शन के अनुसार अपने तन- मन की ओर ध्यान देते हैं। व्यायाम, योग्य आहार आदि नियमों के पालन करने के साथ-साथ हमें एक और बात की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए; जिस का दिग्दर्शन निम्नलिखित दो मंत्रों के द्वारा ऋषि करते हैं-

‘‘वांम् आसन् नसोः प्राण–
श्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः
अपलिताः केशा अशोण दन्ता
बहु बाह्वोर्बलम्।।
उर्वोरोजो जंघयोर्जवःपादयोः।
प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे
सर्वात्मानिभृष्ट।।
(अथर्ववेद १९.६०. १व२)

‘मेरे मुख में उत्तम वाणी है, नासिका में बहुत बढ़िया प्राणों का संचार है, मेरे नेत्रों की ज्योति और कानों की श्रवण शक्ति उत्तम है, मेरे बाल पके हुए नहीं हैं, दांत साफ-सुथरे और मजबूत हैं। मेरी बाहों में विपुल बल है, पैरों में ओज, जंघाओं में वेग और चरणों में स्थिरता है। मेरा व्यक्तित्व संकटों से मुक्त है।‘ इतना सुंदर अर्थ धारण करने वाले ये मंत्र, चिंतन के लिए बहुत उपयुक्त हैं।

मनुष्य का मन और शरीर परस्परावलंबी हैं। शरीर अगर आरोग्यसंपन्न और साफ सुथरा होगा, तो मन की प्रसन्नता बढ़ती है। यह अपना हर रोज का अनुभव है। साथ ही हमें यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि शरीर की कार्यक्षमता ज्यादातर मन की प्रसन्नता और आत्मविश्वास के बल पर टिकी हुई रहती है। यह मन आत्मविश्वास के साथ जब अलग-अलग विषयों का रचनात्मक चिंतन करने लगता है, तब उन शक्तियों का संचार उस खास हिस्से पर अत्यंत प्रभावशाली ढंग से होने लगता है। यह बात ध्यान में रखकर ऋषियों ने इस मंत्र में आरोग्यसुधार के लिए मन की भावनाओं का किस तरह उपयोग हो सकता है, यह बात विस्तार से समझायी है। इस मंत्र का उपयोग, जब हम आसनस्थ होकर ध्यान करते हैं, उस समय कर सकते हैं।

अवकाश के समय शिथिल अवस्था में आसन पर बैठना चाहिए। तड़के अथवा रात के समय बैठें, तो अति उत्तम! एक- दो दीर्घ श्वास लीजिए। मन में आत्मविश्वास और मुख पर स्मित हास्य हो। उस असीम शक्तिशाली परमात्मा का चिंतन कर के, उनका आवाहन कीजिए और वह विश्वचेतना क्रमशः हमारे शरीर

के प्रत्येक अवयव की ओर बढ़ रही है, ऐसा अनुभव कीजिए। जिह्वा, नाक, नेत्र, कान, बाल, दांत, हाथ-पांव आदि विभिन्न स्थानों पर मन से ही कुछ देर के लिए उस चेतना को स्थिर कीजिए। वह सभी दोषों से मुक्त होकर आरोग्य सम्पन्न सशक्त और स्फूर्तिवान हो रहा है, ऐसी भावना कीजिए।

योगवासिष्ठ नामक ग्रंथ में इस भावनाबल का बहुत महत्त्व बताया गया है। प्रबल श्रद्धा के बल पर ही मीरा के लिए विष प्रभावहीन बन गया। नृसिंह भगवान खम्भे से निकल सके, तो केवल श्रद्धा के ही कारण! इस भावनाशक्ति का परिणाम जड़ पदार्थों पर भी हो सकता है।

इस कारण आयुर्वेद में केवल दवा ही नहीं ली जाती; अपितु मंत्रों की अथवा श्रद्धा की सहायता से अनुकूल भावना निर्माण करके, दवा देने पर ही उसका पूर्ण प्रभाव दिखाई देता है। इतना ही नहीं, दवा के लिए, जंगल से, जड़ी-बूटियाँ लाने से एक रोज पूर्व, उनको खास निमंत्रण भी दिया जाता है। इसके बाद ही उसे श्रद्धा के साथ घर ला कर, रोगी के लिए औषधि – विशेष का निर्माण किया जाता है।

अपनी इस अंतश्चेतना का उपयोग अपना और सबका जीवन अधिक मात्रा में आरोग्यमय एवं सुखी बनाने के लिए अगर हम कर सकें, तो कई छोटी-बड़ी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।'

प्रकृति का यह अद्भुत नियम है कि एकाग्र चित से की हुई प्रबल भावना, वस्तु या अवयव पर अनुकूल परिणाम करती है। शर्त इतनी सी ही होती है कि भावना एकाग्रता के साथ एवं रोज-रोज दीर्घ काल तक बिना भूले की जानी चाहिए।

मन की अगाध शक्ति का यह स्रोत, अगर उन खास अवयवों पर पहुंचता रहा, तो शुरू-शुरू में उनमें होने वाला परिवर्तन अत्यंत सूक्ष्म रहेगा, परंतु बाद में यह परिवर्तन हमारे ध्यान में भी आने लगेगा।

◆◆◆◆

सद्गुणों की सूची में दान (...पृष्ठ १३ का शेष)

तरस आती है कि इनको कैसे अध्यापक कहें। मैंने ऐसे लोगों के पास बैठकर शिक्षा पाई,जो सवेरे ७:०० बजे पढ़ाने बैठते, तो सायं काल आठ बजे ही भोजन करने के लिए उठते थे। अभी एक वर्ष ही हुआ है, रत्नागिरि के ऐसे एक महापुरुष का देहावसान हुए। मैंने अपने जीवन में जो ऋषितुल्य लोग देखे, उनमें इनका नाम मुझे रोज याद आता है। पण्डित पुरुषोत्तम शास्त्री फड़के। १०० वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ। एक ब्राह्मण कितना दान कर सकता है, उससे सबसे ऊंचा दान वो है। सातवें वर्ष से वे अध्यात्म पढ़ते हुए जीवन में ६००० से अधिक प्रवचन दिए। एक भी प्रवचन से एक पाई कभी ली नहीं और अंतिम वर्ष तक सवेरे ७:०० बजे से पढ़ाते बैठ जाते, छोटे-बड़े आते, बिटिया आती, कॉलेज के विद्वान लोग भी आते, उनको भी सिखाते। संस्कृत भाषा सब लोगों को आनी चाहिए। इसलिए बड़े से छोटे बच्चों को यहाँ से पढ़ाना आरंभ करते और सौवें वर्ष तक, वे पढ़ाते रहे। यह जो ज्ञान का दान है, सामान्य थोड़े है और प्रसन्न रहते थे। तीन बार मैं उनके दर्शन के लिए स्वयं गया। बहुत आनंद मिला। यह विद्या दान, यह ज्ञान दान, यह दैवी संपत्ति का लक्षण है।

क्रमशः

ऐसी होगी नव-अयोध्या नगरी !

श्री राम जन्मभूमि विवाद पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद, भारत सहित दुनियाभर के राम भक्तों में यह आकांक्षा बलवती हो गई है कि वे जल्दी से जल्दी अयोध्या आएँ और सरयू के पावन तट पर भव्य श्री राम मंदिर में रामलला के दर्शन करें।

प्रकारांतर से इसका अर्थ है कि अयोध्या को अब इस तरह से तैयार करना होगा कि वह सभी के मनोनुकूल हो। इसकी तैयारी शुरू हो चुकी है।

अयोध्या की महिमा के अनुरूप, बीते ३ साल से यहाँ राम पौड़ी पर दीपोत्सव का भव्य कार्यक्रम हो रहा है। पिछले साल, यहाँ करीब तीन लाख दीपक जलाए गए, तो इस साल ५,५१००० दीयों के साथ नया कीर्तिमान बना। इंडोनेशिया, श्रीलंका, फिलिपींस व नेपाल जैसे देशों से कलाकार आए और अपने-अपने यहां की रामायण का मंचन भी किया। इस महोत्सव का साक्षी बनने के लिए अन्य कई देशों से बड़ी संख्या में लोग आए। दीपोत्सव के कार्यक्रम ने दीए बनाने वाले, ना जाने कितने परिवारों को, नए सिरे से अपने पुश्तैनी काम से जोड़ा, रोजगार दिया।

अयोध्या में श्रीराम की अद्‌भुत और अद्वितीय मूर्ति बनाने की योजना है, जिसकी ऊँचाई २५१ मीटर होगी। यह मूर्ति दुनियाँ में सबसे ऊँची होगी। वैसे अभी भी, दुनियां की सबसे ऊंची मूर्ति का मुकुट भारत के सिर पर ही है। वह है गुजरात में केवड़िया स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल की ' स्टैचू ऑफ यूनिटी', जिसकी ऊंचाई १८२ मीटर है। २.७ एकड़ में रामलला का मुख्य गर्भ गृह बनेगा। ६७ एकड़ की अधिग्रहीत भूमि पर चार और मंदिर बनाने की योजना है।

इस भागीरथ योजना में अयोध्या की आधारभूत संरचना में भी तेजी से सुधार का काम किया जाएगा। जिससे यह दुनिया भर से आने वाले पर्यटकों की आकांक्षाओं के अनुरूप हो, आध्यात्मिकता से सराबोर हो और विश्व स्तर की नगरी बने।

> इस भागीरथ योजना में अयोध्या की आधारभूत संरचना में भी तेजी से सुधार का काम किया जाएगा। जिससे यह दुनिया भर से आने वाले पर्यटकों की आकांक्षाओं के अनुरूप हो, आध्यात्मिकता से सराबोर हो और विश्व स्तर की नगरी बने।

यहां श्रीराम हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने का काम शुरू हो गया है। मई २०२० से इस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की शुरुआत होने का अनुमान है। इसी तरह रेलवे स्टेशन को भी नया रूप दिया जा रहा है। इस पर करीब १०० करोड रुपए की लागत आएगी। इसका विस्तार भी किया जा रहा है। बस अड्डे का भी आधुनिकीकरण कर इसे अंतरराज्यीय बनाया जाएगा। पुराने फैजाबाद और अयोध्या के बीच करीब ५ किलोमीटर लंबे फ्लाईओवर का निर्माण किया जाएगा। श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए इस क्षेत्र में १० पांच सितारा होटल बनेंगे; तो साथ ही १०,००० लोगों के लिए आधुनिक सुविधाओं वाले रैन बसेरे भी बनाए जाएंगे। व्यवस्थागत ढांचा इस तरह से तैयार किया जाएगा कि जिससे देश- दुनिया के सभी वर्गों के लोग रामलला का सान्निध्य पा सकें और आध्यात्मिकता के सागर में गोते लगा सकें। यहाँ बड़े पैमाने पर धर्मशालाओं का भी निर्माण किया जाएगा, जिससे किसी भी वर्ग के श्रद्धालु को किसी भी तरह की दिक्कत नहीं हो। पर्यटन की दृष्टि से यहाँ बड़ी संख्या में रिजॉर्ट बनेंगे और सरयू में कोलकाता तक के लिए बोट सेवा चालू हो जाएगी। शहर को भी नए सिरे से व्यवस्थित किया जाएगा; जिसमें सभी तरह के केबल भूमिगत रहेंगे, रोशनी की उन्नत और उत्तम व्यवस्था होगी। राम की पौड़ी की भी नए सिरे से साज-सज्जा होगी, जिस पर काफी धन व्यय हो सकता है।

अयोध्या के लिए पहले से तैयार की गई योजना से नव अयोध्या के स्वरूप को और बड़ा करने की तैयारी चल रही है। संभव है,इसे अंतिम रूप देने से पहले सलाहकार कंपनी प्राइस वॉटरहाउस कूपर्स सहित कुछ अन्य एजेंसियों से भी सलाह ली जाए। वैसे उत्तर प्रदेश सरकार की प्रस्तावित स्मार्ट शहरों की सूची में भी अयोध्या का नाम तो शामिल है ही।

– उमेश्वरकुमार (साभार पाञ्चजन्य)

अगाध श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास की प्रतीक : शबरी!

उसे पक्का विश्वास था कि एक–न–एक दिन, श्रीराम उसे दर्शन देने यहाँ अवश्य आएंगे। नित्य प्रति वह मार्ग साफ करती, भगवान के बिराजने के लिए सिंहासन सजाती, भोग हेतु रोज ताजे–ताजे फल एकत्र करती और ये सब, वह आजीवन करती रही बिना थके, बिना ऊबे! उसे अपने गुरु के वचनों पर अगाध विश्वास जो था! शबरी कहीं नहीं गई। उसी एकांत में रही, उसने 'क्षेत्र–संन्यास' ले लिया।

शबरी का पूरा जीवन श्रीराम की प्रतीक्षा में बीत गया; बाल्यकाल से अंतिम क्षणों तक! शबरी का चरित्र असाधारण रहा। उस भील कन्या का गुरु–वचनों पर अटल विश्वास अप्रतिम था। प.पू.गुरुदेव कहते हैं कि, ''भगवान राम का अवतरण ही शबरी जैसे अनन्य भक्तों की स्नेहपूर्ति हेतु हुआ था। क्या प्रेम में प्रतिनिधित्व चलता है?''

कौन थी ये शबरी?

शबरी, हीन जाति की किरात कन्या थी। उसके पिता भीलों की बस्ती के प्रमुख थे। उसके विवाह हेतु जुटाई गई भोग सामग्री में कुछ बकरे भी थे। वह उनके बच्चों के साथ खेलती। पहले उसे यह पता नहीं था कि उसी के विवाहोपलक्ष्य की दावत में उन्हें काटा जाना था। ज्ञात होने पर उसने आग्रह किया कि इन्हें काटा न जाए। पर उसकी कौन सुनता? उसके पिता ही नहीं माने।

कभी–कभी तामसी प्रवृत्ति के परिवार में भी कोई सात्विक जीवात्मा आ जाती है। शबरी ने उन बकरों को बचाने के लिए विवाह न करने का निर्णय लिया और घर छोड़कर दूर चली गई। वह रातभर दौड़ती रही, दौड़ती रही। प्रात:काल होते ही, किसी पेड़ पर चढ़ जाती, जिससे कि वह पकड़ी न जा सके।

राम कथा के पात्र

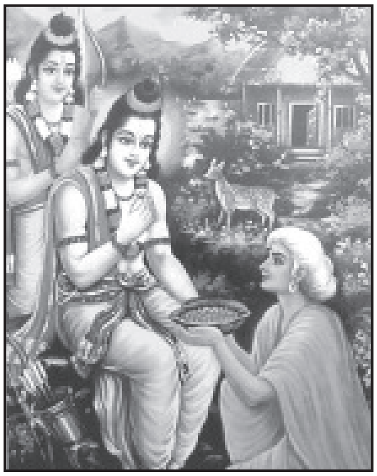

जो सात्विकता से भगवान का नाम लेकर किसी अच्छे कार्य हेतु दौड़ता है, वह एक न एक दिन मंजिल पर पहुंच ही जाता है। शबरी भी एक दिन पम्पा सरोवर के किनारे महर्षि मतंग के आश्रम पर पहुँच गई, पर आश्रम में घुसने का साहस न जुटा सकी। मन ही मन उसने वहीं रह कर उनकी सेवा करने का निश्चय किया।

वह दिनभर आसपास के पेड़ों के बीच छिपी रहती और प्रात: काल जल्दी उठ कर, महर्षि और उनके शिष्यों के उठने से पूर्व ही, आश्रम का आंगन, मार्ग आदि सब–कुछ झाड़–पोंछ कर साफ कर देती थी। महर्षि ने समझा, उनका कोई शिष्य यह सेवा कर देता होगा? पर, जब उन्हें यह पता चला कि यह सेवा कोई शिष्य नहीं कर रहा है, तो यह जानने के लिए कि फिर कौन यह सेवा कर रहा है, महर्षि ने प्रात: जल्दी उठ कर देखा कि यह सेवा नित्य शबरी करती है। पूछ–ताछ में महर्षि को उसकी सब कथा ज्ञात हुई। इस पर महर्षि ने अपने आश्रम के पास ही उसकी कुटिया बनवा दी। उन्होंने शबरी को ''**राम–मंत्र**'' की दीक्षा दी। वह मंत्र जाप के साथ अपने सद्‌गुरु की सेवा में सतत लगी रही। ऐसा करते–करते काफी समय बीत गया।

एक बार मतंग मुनि ने अनुभव किया कि उनका अंतिम समय अब निकट आ रहा है, अत: वे आश्रम छोड़ ब्रह्मलोक जाने की तैयारी करने लगे।उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर अपना निर्णय बता दिया; ताकि वे अन्यत्र अपने–अपने गंतव्य की ओर जा सकें।

विदाई के समय शबरी उनके चरणों में गिर पड़ी और आर्त स्वरों में बोली, ''भगवन्! मैं अनपढ़ और अज्ञानी हूं। मेरे कल्याण का भी कोई मार्ग बताइए।''

इस पर महर्षि मतंग ने स्नेह भरे शब्दों में उसे आश्वस्त करते हुए कहा,''मैंने तुम्हें राम मंत्र की दीक्षा दी है। श्रद्धा रखना, एक ना एक दिन, तेरी कुटिया पर भगवान राम का आगमन होगा।''

गुरुवचनों पर अगाध आस्था:–

महर्षि मतंग के उत्तराखंड में जाने के पश्चात् उनके शिष्य भी वह आश्रम छोड़कर चले गए और पीछे रह गई अकेली शबरी! उसने गुरु–वाक्य को ही प्रमाण मानकर अपने जीवन का आधार बना लिया और उसी आश्रम में रहकर अपने आराध्य श्रीराम की प्रतीक्षा करने लगी।

उसे पक्का विश्वास था कि एक–न–एक दिन श्रीराम उसे दर्शन देने यहाँ अवश्य आएंगे। नित्य प्रति वह मार्ग साफ करती, भगवान के बिराजने के लिए सिंहासन सजाती, भोग हेतु रोज ताजे–ताजे फल एकत्र करती और ये सब वह आजीवन करती रही बिना थके, बिना ऊबे! उसे अपने गुरु के वचनों पर अगाध विश्वास जो था! शबरी कहीं नहीं गई। उसी एकांत में रही–उसने 'क्षेत्र–संन्यास' ले लिया।

प.पू..गुरुदेव कहते हैं–''बहुत घूमने से, तीर्थ यात्रा आदि से ही प्रभु की प्राप्ति होती है, ऐसा नहीं। वर्तमान समय में इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, रमण महर्षि! उन्होंने १७ वर्ष की अवस्था में जहां साधना आरम्भ की, फिर वहां से कहीं नहीं गए। साधना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण नियम है कि हम जिसका सतत् चिंतन करते हैं, वह हमारे अंत:करण में प्रकट होता है; पर विडम्बना यह है कि मनुष्य के पतन का कारण भी चिंतन है और उत्थान का कारण भी चिंतन ही है। चिंतन– कैसा हम करें? गीता में भी इसे इस प्रकार कहा है,

''ध्यायतो विषयान्पुंस:
संगस्तेषूपजायते।
संगात् संजायते, काम:,
कामात्क्रोधोऽभिजायते।''
(२/६२)

क्रोधाद् भवति सम्मोह:
सम्मोहात्स्मृतिविभ्रम:।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धि
नाशात्प्रणश्यति '' (२/६३)

आशय यह है कि ''इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने चिन्तन की दिशा धारा बदल दें (प्रपंच से अध्यात्म की ओर) तो बाकी सब बातें, अपने–आप आएंगी ग्रंथ आएगा, मंत्र आएगा और साधन आदि सब कुछ आएगा। जरूरत है 'Line of thinking' बदल दी जाय।''

महत्त्व एकांत का :–

चिंतन की धारा बदलने के लिए आवश्यक है, एकांत! शबरी भी एकांत में ही बैठी थी। गुरुदेव कहते हैं, ''हम तो अपने कमरे में भी अकेले नहीं रह सकते हैं; वहां TV है, मोबाइल है। ''शबरी अकेली थी, उसकी संगति प्रकृति की थी। प्रकृति की संगति जीव का उत्थान करती है और मनुष्य की संगति जीव के पतन का कारण भी बन सकती है। इसलिए साधक प्रकृति की संगति में रहते हैं। इसी तरह शबरी भी प्रकृति की गोदी में अकेली है। कोई उसके साथ नहीं। जहां भी एकांत मिल जाए, जीव को उसका पूरा लाभ लेना चाहिए। 'साधक पंचक' में शंकराचार्य जी भी कहते हैं,' साक्षात परब्रह्म का अनुभव करके किस प्रकार योगी एकांत में बैठ सकता है।' श्रीमद्‌भागवत में भी भगवान ने एकांत पर बहुत जोर दिया है।

शबरी को संयोग से स्वत: ही एकांत उपलब्ध हो गया। उसे

साधन का विशेष कुछ ज्ञात नहीं। उसे एक ही बात का चिंतन है, गुरुदेव ने कहा है ,''श्री राम आएंगे।'' वह श्रीराम की कल्पना में डूबती गई; सुंदर वल्कल वस्त्रों में श्री राम की कल्पना! उसके सामने श्री राम का एक भाव-चित्र खड़ा हो गया। मन में यह सामर्थ्य है कि वह इच्छित छवि बना सकता है। साधना में यह महत्त्वपूर्ण है कि साधक ने भगवान की जिस छवि का ध्यान किया, प्रभु उसे उसी रूप में आकर कृतार्थ करते हैं।

अटल विश्वास कभी नहीं हारता :–

शबरी को अपने गुरु के वचनों पर पूर्ण विश्वास था, उसी आधार पर वह प्रतीक्षा करती रही, श्री राम के आगमन की! एक-दो दिन नहीं, एक-दो माह नहीं, अरे १०-२० वर्ष भी नहीं ! उसने आजीवन प्रतीक्षा की। दूसरा कोई भी टूट सकता था; पर शबरी का विश्वास टूटा नहीं- ''जब मेरे गुरुदेव ने कहा है; तो श्रीराम आएंगे अवश्य।''

''मुझे भरोसा तेरा राम,
एक भरोसा तेरा राम।
अशरण शरण शांति के धाम,
मुझे भरोसा तेरा राम।।''

एक साधक की यही संपत्ति है। गुरु कोई व्यक्ति नहीं, मनुष्य नहीं। गुरु एक तत्त्व है। विश्वास उसी तत्व का होना चाहिए।

वह श्री भगवान का दर्शन प्राप्त कर धन्य हो गई। वह पगला गई। प्रेमवश नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है,उसे समझ ही नहीं आ रहा है कि वह क्या करे, क्या बोले? वह श्रीचरणों से लिपट गई। मानो शब्दों का तिरोभाव ही हो गया। अद्वैत में शब्द का अवकाश नही, लीनता होती है।

''ॐ ब्रह्मानंदं परमसुखदं
केवलं ज्ञानमूर्तिं;
द्वंद्वातीतं गगनसदृशं
तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं-
सर्वधी: साक्षीभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं
सद्गुरुं तं नमामि।'' (गु.गी:८९)

यह उस परमतत्त्व का गुरुरूप में वर्णन है।

साधना की तीन बातें :–

शबरी बाल्यावस्था से अंतिम अवस्था तक प्रतीक्षा करती रही। यह भी एक साधना ही थी, जो सफल रही। यहाँ हम देखते हैं कि साधना की सफलता हेतु तीन बातें अनिवार्य हैं।

१) साधन दीर्घकाल तक हो:–

साधन नित्य और नियमित हो। इतना नियमित, कि भोजन में छुट्टी हो सकती है, पर भजन में नहीं।

२) साधक की अपनी साधना में श्रद्धा हो:–

जिस साधक को अपने साधन में किंचित भी संदेह हो अथवा पूर्ण रूप से विश्वास न हो, उसे सफलता नहीं मिलती । जीवन में श्रद्धा का सर्वोच्च स्थान एवं शक्ति है। श्रद्धा रखो और चलते रहो-अवश्य पहुंचोगे।

३) साध्य का एक निश्चित भाव रूप हो:–

साधक अपने अंतर्मन में एक निर्धारित भावरूप का ही नित्य ध्यान करे। यह ध्यान की एकाग्रता हेतु आवश्यक है। फलस्वरूप भगवान उसी रूप में आकर उसे दर्शन देंगे।

शबरी ने भगवान का जिस वल्कल वेश में ध्यान किया, श्रीभगवान उसी रूप में पधारे। अत: शबरी उन्हें तुरंत पहचान गई। वह श्री भगवान का दर्शन प्राप्त कर धन्य हो गई। वह पगला गई। प्रेमवश नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है,उसे समझ ही नहीं आ रहा है कि वह क्या करे, क्या बोले? वह श्रीचरणों से लिपट गई। मानो शब्दों का तिरोभाव ही हो गया।अद्वैत में शब्द का अवकाश नहीं, लीनता होती है।

शबरी बेर का दोना ले आई और स्नेहवश चख-चख कर दोनों भाइयों को देने लगीं, यह सोच कर कि कहीं खट्टे तो नहीं हैं? भगवान के दर्शन होने पर इतनी भावावेश में

है कि उसे यह विचार ही नहीं आया कि भगवान को झूठे बेर खिला रही है! रामजी ने बेरों की प्रशंसा की, मिठास तो प्रेम में ही है। प्रेम कलंकित न हो। ईश्वर को मात्र उनके लिए ही प्रेम करो।

महापुरुष वर्णन करते हैं कि शबरी के बेर खाकर रामजी ने गुठली फेंक दी थी। उनसे द्रोणाचल पर्वत पर संजीवनी वनस्पति उत्पन्न हुई। इसी संजीवनी से लक्ष्मण को जीवनदान मिला था। कहते हैं- अतिशय भजन करो, सच्चे साधु-संतों की वाणी में विश्वास रखो, शबरी का चरित्र मानव मात्र के लिए आश्वासन रूप है कि भगवान अवश्य मिलते हैं।

श्रीराम ने शबरी से पूछा,''तेरी कोई इच्छा है?''

शबरी ने कहा,'' इस पंपा सरोवर के अशुद्ध जल को आप शुद्ध कर दीजिए।'' किसी समय एक ऋषि ने शबरी को लात मारी थी, सो इस सरोवर का जल खराब हो गया था।

रामजी कहते हैं कि- इस जल को शुद्ध करने की शक्ति मुझ में नहीं है। यदि शबरी के चरण-जल की इस सरोवर में अंजली दी जाए, तो बात कुछ बन सकती है। शबरी को उस सरोवर में स्नान कराया गया और फलत: सरोवर का जल शुद्ध हो गया।

श्रीभगवान ने शबरी को नवधाभक्ति का उपदेश देकर उसका उद्धार किया। फलस्वरूप श्रीराम का दर्शन करती हुई शबरी योगाग्नि में विलीन हो गई। ◆

ईश्वर जिस स्थिति में रखे, उसी में आनंद मनाइये!

एक बार एकनाथ महाराज विट्ठलनाथ जी के मंदिर में दर्शन करने गए। एकनाथ जी को सुयोग्य पत्नी मिली थी, इसीलिए वे श्री भगवान का उपकार मानते थे। वे कहते थे कि मुझे स्त्री का संग नहीं सत्संग दिया है। थोड़ी ही देर बाद उस मंदिर में भक्त तुकारामजी दर्शन के लिए आए। तुकारामजी की पत्नी कर्कशा थी। कर्कशा पत्नी के लिए भी तुकारामजी, भगवान का उपकार मानते थे। वे कहते कि हे भगवान ! यदि तुमने मुझे अच्छी और सुंदर पत्नी दी होती, तो मैं सारा दिन उसी के पीछे लगा रहता और तुमको ही भूल जाता। अत: कर्कशा पत्नी मिलने पर मेरा तो भला ही हुआ है।

एकनाथजी को अनुकूल पत्नी मिली, तो उन्हें इसी में आनंद है और तुकाराम जी को प्रतिकूल पत्नी मिली, तो भी उन्हें आनंद है। दोनों को अपनी- अपनी परिस्थिति से संतोष है और भगवान का उपकार मानते हैं।

नरसी मेहता ने अपनी पत्नी की मृत्यु पर भी आनंद ही माना और कहा--

''भलुं थयुं भागी जंजाल।
सुखे भजीशुं श्री गोपाल।।''

अर्थात, अच्छा हुआ कि कुटुम्ब का झंझट छूट गया है। अब तो मैं बड़े सुख से, निश्चिंत मनसे श्री गोपाल का भजन कर सकूंगा।

एक संत की पत्नी अनुकूला थी, दूसरे की प्रतिकूला थी और तीसरे की संसार को छोड़कर चली गई, फिर भी ये तीनों महात्मा अपनी-अपनी परिस्थिति में संतुष्ट हैं।सच्चा वैष्णव वही है, जो प्रत्येक परिस्थिति में परमात्मा की कृपा का ही अनुभव करता है और मन को शांत और संतुष्ट रखता है। मन को शांत रखना भी बड़ा पुण्य है।

(डोंगरेजी महाराज)

श्रद्धांजलि : स्व. श्री जनार्दन पटवारी

प्रिय बाबा!!

आज भी आपका दिव्य गति को प्राप्त करना स्वप्नवत् लग रहा है। बीते दिनों में बहुत सारे लोग मिलने के लिए आते रहे। कुछ ने फोन पर आपके प्रति अपनी संवेदनाएँ प्रकट की। हर कोई इस बात को कहते हुए भावविवश हो रहा था कि, ''पटवारी गुरुजी ने हमें गीता सिखाई!'' हर किसी का कहना था कि, ''उन्होंने कभी किसी से कठोरता भरी बात नहीं की! कभी किसी का मन नहीं दुखाया!'' आप अजातशत्रु रहे! बहुत सारी बातें लोग कर रहे थे, जो सुनते-सुनते मुझे आपका वह दर्शन हो रहा था, जो इतना निकट रहते हुए भी शायद आज तक उतनी उत्कटता से नहीं हो पाया।

आपकी कुछ छात्राएँ मिलने के लिए आई थीं, जो अपने आँसू रोक नहीं पा रही थीं। आपकी विद्यार्थिप्रियता थी ही कुछ ऐसी!

आप के विषय में मैं क्या लिखूं?

आपने मेरे लिए क्या नहीं किया? मेरा समय व्यर्थ न जाए, मेरा व्यासंग अधिकाधिक हो, अधिकतर श्लोक-अभंग-ओवियां स्तोत्रादिक मुझे कंठस्थ हो.. इन सारी बातों को लेकर आप अत्यंत आग्रही रहे। बचपन से ही मैं अपनी कविता सब से पहले आपको सुनाया करता! गीता के विषय में क्रमशः जो कुछ लेखन कर रहा था, आपके देखे बिना, मैंने वह कभी प्रसिद्ध नहीं किया।

आपको तो स्मरण होगा, कैसे आपने चलते-फिरते, कभी सायंकाल में किसी मंदिर में ले जाकर, जैसे भी हो, प्रयासपूर्वक बचपन में ही मुझे और ताई को गीता पढ़ाई, कंठस्थ कराई। मेरे लिए और ताई के लिए पिता एवं गुरु दोनों भूमिकाओं में आप अत्यंत दक्ष थे। एक ही समय अत्यंत अनुशासनप्रिय भी और अत्यधिक भावुक भी।

आपने स्वयं अपनी छात्रावस्था में भारी प्रतिकूलताओं के होते हुए भी माधुकरी भिक्षा मांगकर जिस प्रकार अपना अध्ययन पूरा किया वह एक दिव्य तप ही था। उन दिनों कभी-कभी आप को बिना खाना खाए भी सोना पड़ता था, लेकिन कुछ पढ़े एवं बिना कुछ कंठस्थ किये आप कभी सोये नहीं।

ज्ञानेश्वरी पर आपकी जो निष्ठा थी, उसके विषय में तो क्या कहूँ? ज्ञानेश्वरी आपको प्राणों से भी अधिक प्रिय थी।

१८ जनवरी के दिन अंतिम क्षणों में पूज्य गुरुदेव ने स्वयं आकर अपना हाथ आपके मस्तक पर रखना एवं उन्हीं के करकमलों से गंगाजल तथा माला का प्राप्त होना, यह तो आपकी जीवन भर की गई साधना का अमृतफल ही था।

जगद्गुरु तुकाराम महाराज के शब्दों में कहा जाए तो,

याजसाठी केला होता अट्टाहास।
शेवटचा दिस गोड व्हावा।।
अंतिम क्षण पावन हुआ..।
जीवनभर की गई साधना सफल हुई।।

बाबा,

आप कहा करते थे कि जब कभी मन विषण्ण हो जाए, कोई आशंका सताने लगे तो तुकाराम महाराज के अभंगगाथा को खोलना..

(...शेष पृष्ठ ३० पर)

विशिष्ट आयोजनों के साथ

प. पू. गुरुदेव का ७१ वाँ जन्मोत्सव सानंद संपन्न!

यह परम हर्ष का विषय है कि हमें दूसरी बार राजस्थान प्रदेश में परम पूज्य गुरुदेव का जन्मदिवस मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर के हेतु बने श्री भगवान सहायजी तोषनीवाल, जयपुर। आपके द्वारा, 'ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ पुष्कर' में श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण पर आधारित श्रीराम कथा का आयोजन दिनांक १९ जनवरी से २७ जनवरी, २०२० तक अत्यंत उल्लास एवं प्रसन्नता के वातावरण में संपन्न हुआ। कथा आयोजन श्री तोषनीवाल जी द्वारा राजस्थान एवं बाहर से पधारे सैंकड़ों भक्तों के लिये आरामदायक निवास एवं स्वादिष्ट भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था की गई। फलस्वरूप पूरे नौ दिनों तक श्रोताओं ने प.पू. गुरुदेव की कथा का निश्चिन्त हो कर पूर्ण आनंद प्राप्त किया।

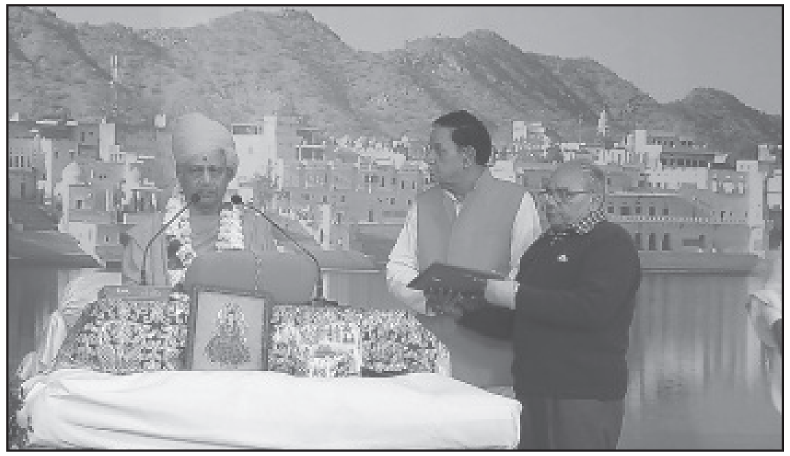

हमारे लिए, 'मणि कांचन योग' यह रहा कि इसी अवधि में दिनांक २० जनवरी, षट्तिला एकादशी को, तिथि के अनुसार एवं दिनांक २५ जनवरी को अंग्रेजी तारीख से, दो बार, पूज्यवर का जन्मदिवस मनाने का सुअवसर मिला।

षट्तिला एकादशी की भोर में ही विद्यापीठ के बटुकों एवं भक्तों ने आपकी वेद-मंत्रों और सुप्रभात स्तुति कर आरती की तथा पूज्यवर ने पुष्कर सरोवर के ब्रह्मघाट पर स्नान कर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पवित्र सरोवर की पूजा-अर्चना संपन्न की एवं गौ-पूजन किया। इसके पश्चात् विद्यापीठ के मंदिर में महामृत्युंजय सवालक्ष बिल्वार्चन सम्पन्न हुआ। मध्यान्ह बाद कथासत्र से पूर्व, भक्तराज आ. नारायणदासजी मारू, सूरत एवं परिजनों द्वारा प.पू. गुरुदेव का मांगलिक वस्तु गुड़ व तिल से तुलादान किया गया। श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल, गोठमांगलोद की ओरसे वहां के न्यासी श्री हेमराजजी दाधीच,जयपुर एवं श्रीभालचंद्रजी व्यास, अजमेर ने गुरुदेव के जन्मदिवस पर वस्त्र, शाल, पगड़ी आदि धारण करवा कर सम्मान किया एवं न्यास की ओर से अभिनंदनपत्र, जिसका वाचन न्यासी श्री भालचंद्र व्यास द्वारा किया गया एव् न्यासीगणों द्वारा भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया।

विशेष अनुष्ठान

उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर सम्पूर्ण अवधि में प्रतिदिन पूज्यवर के आरोग्य एवं शताधिक आयु हेतु भक्तों द्वारा विभिन्न प्रकार के कई विशिष्ट अनुष्ठान संपन्न किए किये गए। इनमें गुरुदेव का विभिन्न वस्तुओं से तुलादान के अतिरिक्त इन्द्रमंत्र जप पक्ष (एक), महामृत्युंजय सवालक्ष बिल्वार्चन, भैमरथी शांति तुलादान, शतरुद्री अभिषेक, श्रीब्रह्मदेव का रुद्राभिषेक, पाटल पुष्पार्चन, तीर्थगुरु पुष्कराज पूजन-अवभृथ स्नान आदि उल्लेखनीय हैं।

ज्ञातव्य है कि मृत्युंजय महादेव मंदिर में '**शतरुद्री महाभिषेक**' एवं '**भैमरथीशांति यज्ञ**' जैसे बृहत आयोजन प्रथम बार संपन्न हुए। इसके अंतर्गत शतरुद्री महाभिषेक में १०० ताम्र कलशों में अलग-अलग द्रव्यों व औषधियों के जल से अलग-अलग आयुवर्धक वेदोक्त मंत्रों के साथ भगवान मृत्युंजय महादेव का अभिषेक किया जाता है। इससे यजमान को आरोग्ययुक्त दीर्घायु प्राप्त होती है। इस अभिषेक को पंडित रेणुकादासजी के आचार्यत्व में १२१ पंडितों ने ८-८ घंटों की दो आवृत्तियों से २ दिन में पूर्ण किया। इसी प्रकार भैमरथीशांति यज्ञ में यज्ञमंडप में एक विशिष्ट वेदी का निर्माण किया जाकर पूर्ण शास्त्रोक्त विधि-विधान से ब्रह्मादि देवताओं का २१ पंडितों द्वारा ८ घण्टों तक स्वाहाकार मंत्रो से आहुतियाँ दी जाती हैं। इन आयोजनों में महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान, पुणे के न्यासी वेदाचार्य श्री महेशजी नंदे प्रतिनिधि स्वरूप बैठे।

मुख्य समारोह

दिनांक २५ जनवरी को प्रात: ४:०० से ६:०० बजे के मध्य आ. गुरुदेव ने पुष्कर सरोवर में स्नान कर प्रसिद्ध ब्रह्माजीके मंदिर में भगवान का विधि-विधान से मंगला- पूजन तथा पाटल पुष्पों (गुलाब के पुष्पों) से सहस्त्रार्चन कर महाआरती सम्पन्न की।

प्रात:कालीन सत्र में मुख्य समारोह आरंभ हुआ। इसमें परम पूज्य स्वामी श्री राघवाचार्य जी महाराज, रेवासाधाम एवं आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज, जयपुर की गरिमामयी उपस्थिति रही। दीप प्रज्जवलन से आरंभ हुए प्रमुख समारोह में श्रीमती विजियाजी गोडबोले तथा श्री सतीश जी शर्मा द्वारा शंकराचार्य विरचित '**श्री पुष्कराष्टकं**' की सुंदर प्रस्तुति ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। तदनंतर ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ,

पुष्कर के अध्यक्ष श्री आनन्दजी राठी ने पूज्य महाराजश्री की वेदसेवा के प्रति समर्पित भाव एवं कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया एवं जन्मदिवस की शुभ कामनाएं प्रेषित कीं।

कलशाभिषेक एव् पूजन

पू. महाराजश्री के ७१ वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विद्यापीठ के ७१ बटुकों ने वैदिकमंत्रोचार के साथ पुष्कर सरोवर समेत देश के विभिन्न तीर्थस्थलों के पवित्र जल से महाराजश्री का कलशाभिषेक किया।

इसके पश्चात कोलकाता के श्री शिवरतन जी मोहता परिवार, पानीपत के श्री सुशीलजी गुप्ता तथा विद्यापीठ के अध्यक्ष श्री आनंदजी राठी, श्री रामावतारजी जाजू, श्री भंवरलाल जी सोनी एवं रामकथा महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीभगवानजी तोषनीवाल तथा उपस्थित समस्त न्यासियों द्वारा गुरुपूजन व ७१ स्वर्ण एवं रजत पुष्पों से कनकाभिषेक किया गया। इससे पूर्व मुख्य यजमान द्वारा मुख्य अतिथि आ. राघवाचार्यजी महाराज तथा आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज का पूजन एवं सम्मान किया गया।

गुरुदेव के ७१वें जन्मदिवस पर विश्वहिंदू परिषद, वेदविद्यालय, ढालेगांव, दाधीच समाज जयपुर आदि कई संस्थाओं द्वारा पूज्यवर को सम्मानपत्र भेंट किये गये।

वेदसेवा: वृत्तचित्र

कार्यक्रम में परम पूज्य गुरुदेव के संरक्षण में, आसेतु हिमालय, संचालित ३४ वेद विद्यालयों में 'गुरु-शिष्य' शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत दिए जा रहे नि:शुल्क शिक्षण कार्य की प्रगति का सचित्र प्रदर्शन किया गया; जिसमें बताया गया कि इन विद्यालयों द्वारा अब तक १५०० वेदज्ञ देश की सेवा में अर्पित किए जा चुके हैं। यह जान कर भक्तगण अत्यंत प्रभावित हुए।

राजस्थान के श्रेष्ठ विद्वतजन सम्मानित

उल्लेखनीय है कि प.पू. गुरुदेव, अपने जन्मदिवस के अवसर पर क्षेत्र-विशेष के विद्वतजनों की उल्लेखनीय सेवाओं को रेखांकित कर सम्मानित किया करते हैं। इस बार राजस्थान प्रदेश के संस्कृत एवं वैदिक क्षेत्र के अनेक मूर्धन्य विद्वानों को उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक-सेवाओं हेतु शाल, श्रीफल, माल्यार्पण, भेंट आदि से सम्मानित किया गया।

समारोह में प्रोफेसर नरेंद्र अवस्थी, जोधपुर द्वारा राजस्थान के श्रेष्ठ विद्वानों का कार्य-परिचय देते हुए उन्हें मंच पर सादर आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। इस क्रम में जिन महानुभावों का सम्मान किया गया उनके नाम इस प्रकार हैं:- १. पं.रामचंद्रजी शास्त्री, अजमेर २. राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉक्टर बद्रीनारायण पंचोली ३. पंडित सोमदत्त जी अग्निहोत्री, जोधपुर ४. आचार्य सुरेंद्रकुमारजी शास्त्री, दूदू ५. आचार्य राजेंद्रप्रसाद जी मिश्र (प्रो. वेद) ६. आ. आनंदजी पुरोहित ७.डॉ अशोक तिवाड़ी (व्याकरण) ८. डॉ राजेंद्र शर्मा (दर्शन) ९. आचार्य विष्णुकांतजी पांडे (संस्कृत) १०. पं. लक्ष्मणजी नामवाला, जोधपुर ११.पं. रामपालजी, जयपुर १२. डॉ. ठाकुरदत्तजी, जोधपुर १३. डॉ नरेंद्र जोशी, जोधपुर आदि को सम्मानित किया गया। ज्ञातहो, जयपुर के अनेक

विद्वानों का सम्मान विगत २०१८ के जयपुर में सम्पन्न जन्मदिवस समारोह में किया जा चुका था।

संतों के मंगल संदेश

इस अवसर पर देशभर के वरिष्ठ संतजनों ने वीडियो संदेश भेजकर आपके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना की तथा आप द्वारा की जा रही वेदसेवा तथा भावी पीढ़ी को सुसंस्कृत बनाने के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। समारोह में जिन वीडियो संदेशों को स्क्रीन पर दिखाया गया वे इस प्रकार हैं :--

१) आदरणीय कांची पीठाधीश्वरजी महाराज २) स्वामी गुरुशरणानंदजी महाराज ३) स्वामी रामदेवजी महाराज ४) आचार्य बालकृष्णजी ५) आ. रमेश भाईजी ओझा ६) मलूकपीठाधीश्वर स्वामी राजेंद्रदासजी महाराज ७) आ. राधाकृष्णजी महाराज एवं ८) आ. पुंडरीकजी महाराज के नाम उल्लेखनीय हैं।

आशीर्वचन

मुख्य अतिथि आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज ने पूज्य महाराजश्री के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना करते हुए कहा कि पुष्कर स्नान, पुष्कर निवास तथा गोविंद की कथाश्रवण में से कौन अधिक महत्त्व का है, यह कहना कठिन है। आपने आशा व्यक्त की कि मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ, जिस दिन भारत के समान ही हमारे महाराजश्री की रामकथा रावलपिंडी, इस्लामाबाद में होगी, मैं उसी दिन से माला पहनना आरंभ करूंगा (वर्तमान मेंआप माला नही पहनते हैं)। आपके द्वारा की जा रही वेदसेवा की प्रशंसा करते हुए आचार्य जी ने कहा कि, ''हमें केरियर ओरिएंटेड एज्युकेशन के साथ ही कल्चरल ओरिएंटेड एजुकेशन'' को भी बढ़ावा देना चाहिए, तभी यह देश सारे विश्व का नेतृत्व कर सकेगा। आपने इस अवसर पर अपनी नव सृजित काव्य रचना भी प्रस्तुत की।

इसीअवसर पर उपस्थित रेवासा धाम के पीठाधीश्वर श्री राघवाचार्यजी महाराज ने कहा कि भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा से ही देश का उद्धार संभव है तथा यह कार्य आदरणीय स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज वैदिकसेवा एवं भावी पीढ़ी को 'गीतापरिवार' के माध्यम से देश भर में कर रहे हैं, जो अत्यंत प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे पूज्य महाराजश्री को जितना दीर्घजीवन प्रदान करेंगे, वे देश का उतना ही अधिक भला कर सकेंगे।

महाराजश्री का मनोगत

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज ने अंत में अपने मनोभाव प्रस्तुत करते हुए कहा-

''संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् इस शरीर के जन्मदिन की यह परंपरा, अलंकारिक रूप में लोगों की अपेक्षापूर्ति मात्र है, इससे उन्हें प्रसन्नता का अनुभव होता है। मैं इसे इसी रूप में देखता और स्वीकार करता हूँ।

जीवन में आरम्भ से यही सोच रही है कि मैं देश की अधिक से

अधिक सेवा करूँ। अत: ''सबसे पहले मेरा देश, फिर समाज और अंत में, मैं कहीं नहीं ''में ही जीवन की सार्थकता ढूंढ़ने का प्रयास रहा। हमें इस सत्य को स्वीकारना पड़ेगा कि देश की भौतिक उन्नति जिसमें भव्य नगरों का निर्माण,तकनीकी एवं वैज्ञानिक उन्नति में है और यह हो भी रहा है; किन्तु यह भारतीयता का गौण पक्ष है, अपर्याप्त है। इसे हम केवल देश के 'हार्डवेयर' के रूप में देख सकते हैं; जब कि इसका 'सॉफ्टवेयर' (भारतीयता की आत्मा) भारतीय संस्कृति में, वेद, गो, गंगा तथा रामकथा जैसे ग्रथों में है। इसके अभाव में 'भारतमाता की अस्मिता की रक्षा नहीं हो सकेगी तथा केवल आधुनिकता की इस चकाचौंध में देश अपनी पहचान खो देगा। अत: वेद बचेगा तभी देश बचेगा।''

प.पू. गुरुदेव ने आगे कहा कि –

''इसीलिए एक ओर वेद संरक्षण और दूसरी ओर भावी पीढ़ी को सुसंस्कृत बनाने हेतु 'गीता परिवार' के माध्यम से अकेला ही आगे बढ़ा, धीरे–धीरे लोग साथ आते चले गए, परिणाम आज सबके सामने है। करीब ३४ वेद विद्यालय, आसेतु हिमालय, आज देश में सेवारत हैं और निकट भविष्य में ही वेद- वेदांगों के उच्च स्तरीय अध्ययन के साथ ही इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य भी, 'वेदश्री तपोवन' के माध्यम से आरम्भ हो सकेगा, जो आगे चलकर विश्व–विद्यालय स्तरीय स्वरूप ग्रहण करेगा।''

अंत में मोमबत्तियों के झिलमिल प्रकाश में, श्रीमती विजया जी गोड़बोले द्वारा प्रस्तुत 'वीर वैदिक' गान की मधुर स्वरलहरियों के मध्य समारोह का समापन हुआ।

- भालचंद्र व्यास

प.पू. गुरुदेव के जन्मदिवस पर रक्तदान!

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के ७१ वें जन्मदिवस षट्तिला एकादशी (दिनांक २० जनवरी) को **'जगदंबा वेद विद्यालय, खामगांव'** द्वारा स्थानीय 'केला हिंदी हाईस्कूल' में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें ७२ जनों ने अपना रक्तदान कर जनकल्याण हेतु त्याग की भावना का परिचय दिया।

इससे पूर्व शिविर में हवन अनुष्ठान के पश्चात्, उपस्थित जनमानस द्वारा पूज्य गुरुवर के स्वस्थ एवं दीर्घजीवन की कामना की तथा अभीष्ट चिंतन किया गया। इसमें वेद विद्यालय के संचालक मंडल के सदस्य एवं पूज्यश्री के अनुयायी भारी संख्या में उपस्थित थे।

शिविर की सफलता में गीता परिवार, खामगांव के साथ ही माहेश्वरी समाज, केला हिंदी माध्यमिक विद्यालय एवं शासकीय अस्पताल का भी विशेष योगदान रहा।

प.पू. गुरुदेव का जन्म दिवस वेदविद्यालयों में धूम-धाम से सम्पन्न!

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संचालित सभी वेदविद्यालयों में षट्तिला एकादशी तदनुसार दिनांक २० जनवरी, २०२० को पूज्यवर का प्राकट्य उत्सव प्रातः ११ से ११.३० के बीच एक ही समय में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। प्रस्तुत है कुछ वेदविद्यालयों का वृत्तांत।

आलंदी वेदविद्यालय

षट्टिला एकादशी, तदनुसार दिनांक २० जनवरी, २०२० का दिन तिथि के अनुसार पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव का दिन रहता है। परन्तु यह वर्ष हम सब साधकों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था; क्योंकि पूज्यवर श्रेष्ठतम जीवन के ७० वर्ष पूर्ण करके ७१वें वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। इस निमित्त, सभी साधक स्थान-स्थान पर पूज्यवर का जन्मोत्सव मना रहे थे। हमारे लिए यह उत्सव अतिविशिष्ट था; क्योंकि पूज्यवर के स्वप्नों की वास्तु ''वेदश्री तपोवन'' के नवनिर्मित दिव्य भवन में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। यद्यपि इस कार्यक्रम में पूज्यवर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं थे; किन्तु उनकी उपस्थिति का प्रतिपल आभास हो रहा था।

इस कार्यक्रम के आरंभ में जन्मोत्सव के यजमान श्रीमान् लक्ष्मणजी जोशी एवं सविता जी जोशी, चिंचवड़, पुणे के द्वारा गौमाता का पूजन किया गया। तत्पश्चात् साधाकाश्रम, देहू से पधारे १०० से अधिक वारकरी साधकों ने प्रभातफेरी के साथ हरिनाम संकीर्तन का गान किया। इसके पश्चात् हम सबके इष्ट संतश्री ज्ञानेश्वर महाराज एवं पूज्य गुरुदेव की पादुकाओं का पूजन व अभिषेक महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के न्यासी आचार्य सुजित जी देशमुख तथा सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय के आचार्य मुकेश जी दंडवते, आचार्य भगवान जी जोशी, आचार्य विजय जी भालेराव एवं आचार्य शुभम् जी मिश्रा की उपस्थिति में संपन्न हुआ। ततरू आचार्य श्री गोपाल जी जोशी, पूज्य हनुमानदास महाराज, पं. अशोक जी पारीक एवं स्वातिताई वालिम्बे के द्वारा प्रवचन सेवा प्रस्तुत की गई। प्रसाद लेकर सभी साधक गुलाब गौरव ग्रन्थ का पारायण करने हेतु अवस्थित हुए। विशेष उल्लेखनीय है कि यह पारायण गीता परिवार, पुणे की बहनों के सान्निध्य में छह घंटे की एक ही बैठक में संपन्न हुआ। संतश्री गुलाबराव महाराज की आरती एवं प्रसाद लेकर पूरा दिन पूज्यवर के जन्मोत्सव को समर्पित कर विदा हुए। इस कार्यक्रम में आदरणीय मोरेकाका व विद्यालय के व्यवस्थापक चंदू भैया का विशेष योगदान रहा। इसप्रकार से वह दिन हम सबके लिए बहुत ही सौभाग्यमय रहा।

स्वामी स्वरूपानंद वेदविद्यालय, वाडी

स्वामीजी का जन्मोत्सव बड़े हर्षोल्लास पूर्वक एक पर्व त्यौहार दीपावली की तरह ही मनाया गया। उत्सव के अंतर्गत सभी प्रकार के अनुष्ठानों की ध्वनि गूंजती रही, रंगोलियां निकाली गई तथा दीपक जलाए गए। वेदविद्यालय में चौदह दिन शतपथ ब्राह्मण पारायण तथा सप्त दिनात्मक गुरुचरित्र पारायण, दत्त प्रार्थना स्तोत्र एवं करुणात्रिपदी के यथाशक्ति पाठों को आनंद के साथ गाया गया। वेदमूर्ति श्री दत्तात्रेयजी रुक्के पुजारी, जो इस वेदविद्यालय के मार्गदीपक हैं, उन्होंने छात्रों के लिए १० श्री गुरुचरित्र ग्रंथों को उपलब्ध कराया तथा वे भी इस

कार्यक्रम में पूर्णरूप से सहभागी थे। वेदविद्यालय के न्यासी श्रीविजयजी कुलकर्णी सरने इस कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएं प्रदान की।

गुरुचरित्र ग्रंथ ही शिष्य को गुरुसेवा सिखाता है, शिष्य की परीक्षा करता है तथा भक्ति भाव में लीन करता है। इस पारायण उत्सव का अनुभव यह रहा है कि विद्यार्थियों के मन में आत्मविश्वास की जाग्रति होते हुए, स्वामी जी के प्रति श्रद्धा और विश्वास दृढ़ हो गए। मैं उन सभी अधिकारी वर्ग का आभारी हूँ, जिन्होंने स्वामी जी के जन्मोत्सव का स्वर्णक्षण सेवा के रूप में हमें प्रदान किया। सभी अधिकारी वर्ग का आभार व्यक्त करता हूँ तथा स्वामी जी के चरणों में साष्टांग दंडवत प्रमाण करता हूँ।

श्रीराम वेदविद्यालय, धुलिया

श्री चंद्रकांत केले काका की देख-रेख में चल रहे श्रीराम वेदविद्यालय, धुलिया में पूज्य गुरुदेव के जन्मोत्सव के अवसर पर आपकी प्रदीर्घ आयु व उत्तम आरोग्य व निरामय जीवन हेतु एकादश दिनात्मक शतचंडी महायज्ञ, सुदर्शन महाहोम, मार्कंडेय आदि सप्त चिरंजीव पूजन, वर्धित दीपमाला प्रकाशोत्सव, कुमारी पूजन, अन्नदान आदि विविध अनुष्ठान आचार्य श्री केशव गुरुजी एवं विद्यालय के विद्वान छात्रों के सान्निध्य में संपन्न हुए। उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय में प्रतिष्ठान के सभी वेदविद्यालयों में वेदविद्या का प्रशिक्षण पाने के पश्चात् ज्योतिष एवं कर्मकांड का प्रशिक्षण दिया जाता है।

बेलोरा वेदविद्यालय

पूज्य गुरुदेव के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में संतश्री गुराबराव महाराज जन्मस्थान टाकली में गुलाबराव महाराज का पूजन व अभिषेक किया गया तथा वेदविद्यालय में गुलाब गौरव ग्रन्थ का पारायण किया गया। वेदविद्यालय के गणमान्य सदस्यों एवं ग्रामीण जनों के साथ पूज्यवर का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

ढालेगांव वेदविद्यालय

श्री समर्थ वेदविद्यालय, ढालेगांव में भी पूज्य स्वामीजी का जन्मोत्सव बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। दिनांक १६ से २० जनवरी तक प्रतिदिन महारुद्र अभिषेक, चतुर्वेद पारायण, महामृत्युंजय जप तथा रामरक्षा स्तोत्र पाठ इत्यादि अनुष्ठान सभी वैदिकों द्वारा संपन्न किये गये। पूज्य स्वामीजी के जन्मदिन के अवसर पर, यहाँ स्थित संतश्री महात्मा जी महाराज की समाधि का अभिषेक व पूजन करके षट्तिला एकादशी के दिन सामवेदाचार्य वेदमूर्ति श्री कृष्ण शास्त्री पलस्कर जी के मुख्यत्व में विद्यालय के आचार्य वेदमूर्ति श्री कुलकर्णी, वेदमूर्ति भास्कर जी जोशी, श्री वेदमूर्ति महेश जी जोशी आदि आचार्यां की उपस्थिति में विद्यालय परिसर में पूज्यवर का जन्मोत्सव मनाया गया। सभी ने पूज्यवर की महानता हेतु अपने-अपने मनोगत भाव व्यक्त किये। पूज्यवर की पादुकाओं पर पुष्पवर्षा की गई। इस कार्यक्रम का संचालन श्री कमलाकर जी पाठक ने किया। श्री रामेश्वरजी भराडिया ने आभार व्यक्त करते हुए महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम को विराम दिया।

वेदविद्यालय जिंतुर –

वैदिक पौरोहित्य वेद पाठशाला, जिंतुर महाराष्ट्र में भी पूज्यवर का जन्मोत्सव आनंद और उत्साह के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम गीता परिवार एवं वेदविद्यालय के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित किया गया, जिसमें विद्यालय के समस्त न्यासीगण एवं गीता परिवार के समस्त कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम १९ एवं २० जनवरी दो दिन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान गुलाब गौरव पारायण, नवार्णजप, कुंजिका स्तोत्र आदि अनुष्ठान संपन्न हुए। षट्तिला एकादशी के अवसर पर ज्ञानेश्वर

महाराज की चरण पादुकाओं का अभिषेक व पूजन किया गया। हरिभक्तिपरायण श्री रामेश्वर जी सोमाणी के द्वारा प्रवचन सेवा दी गई, पूज्यवर के कार्य से सबको परिचित करवाया गया। इस कार्यक्रम में पाठशाला के अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी साबू, श्री सखाराम जी चिद्रवार, द्वारकादास जी सोमाणी, नारायण जी सोमाणी, श्री निवास जी तोषनीवाल, रामनिवास जी मणियार, नारायण जी साबू पंढरीनाथ, दरगड़ आदि मान्यवर उपस्थित थे।

मणिपुर वेदविद्यालय

मणिपुर के चार हजारे गाँव में स्थित मणिपुर वेदविद्यापीठ में भी पूज्यवर का जन्मोत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत ११ हनुमान चालीसा के पाठ गीता पारायण, श्री सूक्त का पाठ किया गया। सभी आचार्य एवं छात्रों ने पूज्यवर की प्रतिमा का पूजन कर 'सुदिनं सुदिनं... गीत का गान किया एवं पूज्यवर के दीर्घायु होने की कामना की। उपस्थित सभी मान्यवरों ने प्रतिमा को प्रणाम कर आशीर्वाद लिया तथा महाप्रसाद से कार्यक्रम को विराम दिया।

वाराणसी वेदविद्यालय

भगवान विश्वनाथ की नगरी काशी स्थित वेदमूर्ति विश्वनाथ देव गुरुकुल में पूज्यवर के जन्मोत्सव के निमित्त दिनांक १९ व २० जनवरी को महामृत्युंजय, महारुद्राभिषेक, हनुमान चालीसा पाठ आदि कार्यक्रम संपन्न हुए। दिनांक २० जनवरी को काशी के मान्यवरों के समक्ष अनुष्ठानों की पूर्णाहूति हुई एवं पूज्यवर की प्रतिमा के पूजन के साथ आपका जन्मोत्सव मनाया गया।

बड़ौदा वेदविद्यालय

सभी वेदविद्यालयों की भांति गुजरात के बड़ोदरा में स्थित स्वामी गोविंददेव गिरि वेद संस्कृत पाठशाला में पूज्यवर का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सभी छात्रों ने विधिवत दुर्गासप्तशती का पाठ किया एवं दर्भ के जल से भगवान शिव का महारुद्राभिषेक किया गया।

मेढ़ा (महाराष्ट्र) वेदविद्यालय

महाराष्ट्र के मेढ़ा गांव में स्थित श्री विनायक वेदपीठम् के छात्रों एवं आचार्यों द्वारा १६०० श्रीसूक्त के पाठ किये गये साथ ही लघुरुद्र का भी आयोजन किया गया। २० जनवरी को स्वामीजी की प्रतिमा का पूजन करके जन्मोत्सव मनाया गया। सभी अनुष्ठान वेदमूर्ति शुभम् मुले के सान्निध्य में संपन्न हुए।

प.पू. गुरुदेव के जन्मदिवस पर दीपोत्सव आयोजित

राष्ट्र संत विद्यावाचस्पति प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के ७१वें जन्मदिवस एवं श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष निर्वाचित होने के उपलक्ष्य में श्री १००८ जयकृष्ण देवाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में दादी माँ भँवर बाई आसोपा धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा अभिनंदनपूर्वक वैदिकों द्वारा वेद मंत्रोच्चारण के साथ २१०० दीपों से दीपोत्सव एवं तत्पश्चात् सुंदरकाड पाठ का आयोजन किशनगढ़, राजस्थान के महर्षि दधीचि रंगवाटिका में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन श्री कन्हैयालाल जी डेरोलिया की अध्यक्षता एवं पंडित देवीलाल जी शास्त्री के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

प.पू. श्री १००८ जय कृष्ण जी देवाचार्य जी महाराज ने प.पू. स्वामीजी महाराज की वेदसेवाओं के प्रशंसा करते हुए उनकी दीर्घ जीवन की कामना की।

– प्रफुल्ल शर्मा

श्रद्धांजलि : स्व. श्री जनार्दन पटवारी

(...पृष्ठ २१ का शेष)

जो भी पृष्ठ सम्मुख हो, वहीं कहीं न कहीं समाधानकारक उत्तर प्राप्त हो जाता है। मैं भी अत्यधिक विषण्ण था हाथों में कुछ चुने हुए अभंगों की पुस्तिका ''भजनी मालिका'' थी। आपका स्मरण करते हुए मैंने वह खोल दी। जिस अभंग पर दृष्टि पड़ी, वह आपके अत्यंत प्रिय अभंगों में से एक संत श्री एकनाथ जी महाराज का अभंग था...

आवडीने भावे हरिनाथ घेसी।
तुझी चिंता त्यासी सर्व आहे।।१।।
नको खेद करू कोणत्या गोष्टीचा।
पति लक्ष्मीचा जाणतसे।।२।।
सकळ जिवांचा करितो सांभाळ।
तुज मोकलील ऐसे नाही ।।३।।
जैशी स्थिति आहे तैशापरी राहे।
कौतुक तू पाहे संचिताचे ।।४।।
एका जनार्दनी भोग प्रारब्धाचा।
हरिकृपे त्याचा नाश झाला ।।५।।

अर्थात्....

रुचिपूर्वक एवं भाव से हरिनाम लेते रहो, तुम्हारी सारी चिंताओं का भार भगवान ने उठा लिया है।। किसी बात के लिए दुःख मत करो, भगवान लक्ष्मीपति सब समझते हैं। वे सभी जीवों का पालन करते हैं, तुम्हारी भी वे उपेक्षा नहीं करेंगे। जो भी परिस्थिति प्राप्त हो, उस में रहो और अपने संचित कर्म के परिणाम को साक्षी बनकर देखो। सद्गुरु श्री जनार्दन महाराज के शिष्य एकनाथ महाराज कहते हैं, प्रारब्ध के कारण जो भी भोग प्राप्त होते हैं, हरिकृपा से उनका नाश हो जाता है।

इस अभंग का आशय मेरे आई और ताई के तथा अपने पूरे परिवार के हृदय में उतर पायें, ऐसा आशीर्वाद दीजिए...।

वैसे आप कहीं गये नहीं... यहीं हैं। हमारे पास... सदा के लिए।

आपका लाडला, **प्रणव**

आपद काल में श्रीकृष्ण सेवा निधि का योगदान

प्राय: स्वामी जी से परिचित लोग इस बात को भली भांति जानते हैं कि उनके द्वारा संचालित 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' अपने वेदविद्यालयों के माध्यम से वैदिक सेवा कर रहा है। गीता परिवार के माध्यम से बाल संस्कार की कक्षाएं लगाकर उत्तम संस्कारों का बीजारोपण कर रहा है। किंतु ''श्रीकृष्ण सेवा निधि'' स्वामीजी की प्रथम संस्था रही।

इस भीषण आपदा काल में जब सभी लोग अपने अपने घरों में लॉकडाउन की वजह से बैठे हुए थे और बाहर के समस्त क्रियाकलाप रूक गये थे तो स्वाभाविक था जो लोग नित्य कुछ कार्य करके धन कमाते थे अब वो सभी असमर्थ थे। ऐसी विकट स्थिति में स्वामीजी का ध्यान उन वैदिक ब्राह्मण पौरोहित्य कर्म करने वाले, वृद्ध ब्राह्मण जन, मंदिरों के पुजारी एवं निराश्रित व्यक्तिओं की ओर गया कि वे सभी इस आपत्ति का सामना कैसे कर रहे होंगे। उन्होंने मन ही मन में संकल्प किया कि अपने परिचित एवं आसपास के क्षेत्र के व्यक्तियों की सहायता की जाये।

योजना के अनुसार निश्चित किया गया कि अभावग्रस्त परिवारों में एक महिने की राशन किट भेजी जाये। इस प्रकार से यह सेवा १३ मई २०२० से प्रारंभ हुई और इसका विस्तार होते हुए वर्तमान समय में अबतक कुल २५०० परिवारों में सहायता प्रदान की गई है। महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे पुणे, डोंबिवली, आलंदी, बीड, परली, औरंगाबाद, परभणी आदि स्थानों पर सेवा प्रदान की गई। नासिक में १४०० परिवारों में राशन किट्स पहुँचाई गई। अभी तुफान के द्वारा कोंकण क्षेत्र में प्रभावित परिवारों को भी नकद धनराशि द्वारा सहायता प्रदान की गई। विषम परिस्थितियों को देखते हुए अभी भी यह सेवा प्रकल्प सक्रिय है।

बात आस्था की

भरोसो दृढ़ इन चरणन को

काँपती-सी आवाज में वैद्यजी बोले, ''कृष्णलाल जी, विश्वास कीजिये कि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि पत्नी ने चिठ्ठी पर आवश्यकता लिखी हो और भगवान ने उसी दिन उसकी व्यवस्था न कर दी हो।

एक पुरानी-सी इमारत में वैद्यजी का मकान था। वे पिछले हिस्से में रहते थे और अगले हिस्से में दवाखाना खोल रखा था। उनकी पत्नी की आदत थी कि दवाखाना खोलने से पहले, उस दिन के लिए आवश्यक घरेलू सामान की एक लिस्ट लिख कर वैद्य जी को दे देती थी।

वैद्यजी गद्दी पर बैठकर पहले भगवान का नाम लेते, फिर वह चिठ्ठी खोलते।

पत्नी ने जो चीजें लिखी होतीं, उनकेभाव देखते, फिर उनका हिसाब करते।

फिर परमात्मा से प्रार्थना करते, 'हे भगवान! मैं केवल तेरे ही आदेश के अनुसार तेरी भक्ति छोड़कर यहाँ दुनियादारी के चक्कर में आ बैठा हूँ।' वैद्यजी कभी अपने मुँह से किसी रोगी से फीस नहीं माँगते थे। कोई देता, कोई नहीं भी देता। किन्तु एक बात निश्चित थी कि ज्यों ही उस दिन के आवश्यक सामान खरीदने जितने पैसे पूरे हो जाते, उसके बाद वे किसी से भी दवा के पैसे नहीं लेते थे, चाहे रोगी कितना ही धनवान क्यों न हो।

एक दिन वैद्यजी ने दवाखाना खोला। गद्दी पर बैठकर परमात्मा का स्मरण करके पैसे का हिसाब लगाने के लिए आवश्यक सामान वाली चिट्ठी खोली, तो वह चिठ्ठी को एकटक देखते ही रह गए। एक बार तो उनका मन भटक गया। उन्हें अपनी आँखों के सामने तारे चमकते हुए नजर आए, किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपनी तंत्रिकाओं पर नियंत्रण पा लिया। आटे-दाल-चावल आदि के बाद पत्नी ने लिखा था, ''बेटी का विवाह २० तारीख को है, उसके दहेज का सामान।''

कुछ देर सोचते रहे, फिर बाकी चीजों की कीमत लिखने के बाद दहेज के सामने लिखा, ''यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।''

एक-दो रोगी आए थे। उन्हें वैद्यजी दवाई दे रहे थे। इसी दौरान एक बड़ी-सी कार उनके दवाखाने के सामने आकर रुकी।

वैद्यजी ने कोई खास तवज्जो नहीं दी; क्योंकि कई कारों वाले उनके पास आते रहते थे। दोनों मरीज दवाई लेकर चले गए। वह सूटेड-बूटेड साहब कार से बाहर निकले और नमस्ते करके बेंच पर बैठ गए।

वैद्यजी ने कहा कि अगर आपको अपने लिए दवा लेनी है, तो इधर स्टूल पर आयें; ताकि आपकी नाड़ी देख लूँ और अगर किसी रोगी के लिए दवाई लेकर जाना है, तो बीमार की स्थिति का वर्णन करें।

वह साहब कहने लगे, ''वैद्यजी! आपने मुझे पहचाना नहीं। मेरा नाम कृष्णलाल है, लेकिन आप मुझे पहचान भी कैसे सकते हैं; क्योंकि मैं १५-१६ साल बाद आपके दवाखाने में आया हूँ। आप को पिछली मुलाकात का हाल सुनाता हूँ, फिर आपको सारी बात याद आ जाएगी।''

''जब मैं पहली बार यहाँ आया था, तो मैं खुद नहीं आया था; अपितु ईश्वर मुझे आप के पास ले आया था; क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर कृपा की थी और वह मेरा घर आबाद करना।

चाहता था। हुआ इस तरह था कि मैं कार से अपने पैतृक घर जा रहा था। बिल्कुल आपके दवाखाने के सामने हमारी कार पंक्चर हो गई। ड्राईवर कार का पहिया उतार कर पंक्चर लगवाने चला गया।'

'आपने देखा कि गर्मी में मैं कार के पास खड़ा था, तो आप मेरे पास आए और दवाखाने की ओर इशारा किया और कहा कि इधर आकर कुर्सी पर बैठ जाएँ।' अँधा क्या चाहे, दो आँखें और मैं कुर्सी पर आकर बैठ गया। ड्राइवर ने कुछ ज्यादा ही देर लगा दी थी। एक छोटी-सी बच्ची भी यहाँ आपकी मेज के पास खड़ी थी और बार-बार कह रही थी, ''चलो न बाबा, मुझे भूख लगी है।''

आप उससे कह रहे थे कि बेटी थोड़ा धीरज धरो, चलते हैं। मैं यह सोच कर कि इतनी देर से आप के पास बैठा था और मेरे ही कारण आप खाना खाने भी नहीं जा रहे थे।

मुझे कोई दवाई खरीद लेनी चाहिए; ताकि आप मेरे बैठने का भार महसूस न करें।

मैंने कहा, ''वैद्यजी मैं पिछले ५-६ साल से इंग्लैंड में रहकर कारोबार कर रहा हूँ। इंग्लैंड जाने से पहले मेरी शादी हो गई थी, लेकिन अब तक बच्चे के सुख से वंचित हूँ। यहाँ भी इलाज कराया और वहाँ इंग्लैंड में भी, लेकिन किस्मत ने निराशा के सिवा और कुछ नहीं दिया।''

> आपकी बातें सुनकर तो लगता है कि भगवान को पता होता है कि किस दिन मेरी श्रीमती क्या लिखने वाली हैं अन्यथा आपसे इतने दिन पहले ही सामान खरीदवाना आरम्भ न करवा दिया होता परमात्मा ने।

आपने कहा था, ''मेरे भाई! भगवान से निराश न होओ। याद रखो कि उसके कोष में किसी चीज की कोई कमी नहीं है। आस-औलाद, धन-इज्जत, सुख-दु:ख, जीवन-मृत्यु सब कुछ उसी के हाथ में है। यह किसी वैद्य या डॉक्टर के हाथ में नहीं होता और न ही किसी दवा से कुछ होता है। जो कुछ होना होता है वह सब भगवान के आदेश से होता है, औलाद देनी है तो उसी ने देनी है।'

मुझे याद है आप बातें करते जा रहे थे और साथ-साथ पुड़िया भी बनाते जा रहे थे।

सभी दवा आपने दो भागों में विभाजित कर, दो अलग-अलग लिफाफों में डाली थीं और फिर मुझसे पूछकर आप ने एक लिफाफे पर मेरा और दूसरे पर मेरी पत्नी का नाम लिखकर दवा उपयोग करने का तरीका बताया था।

मैंने तब बेदिली से वह दवाई ले ली थी; क्योंकि मैं सिर्फ कुछ पैसे आप को देना चाहता था। लेकिन जब दवा लेने के बाद, मैंने पैसे पूछे, तो आपने कहा था, बस ठीक है। मैंने जोर डाला, तो आपने कहा कि आज का खाता बंद हो गया है।

मैंने कहा मुझे आपकी बात समझ में नहीं आई।

इसी दौरान वहां एक और आदमी आया। उसने हमारी चर्चा सुनकर मुझे बताया कि खाता बंद होने का मतलब यह है कि आज के घरेलू खर्च के लिए जितनी राशि वैद्यजी ने भगवान से माँगी थी, वह ईश्वर ने उन्हें दे दी है। अधिक पैसे वे नहीं लेते।

मैं कुछ हैरान हुआ और कुछ दिल में लज्जित भी कि मेरे विचार कितने निम्न कोटि के थे और यह सरल चित्त वैद्य कितना महान है। मैंने जब घर जा कर पत्नी को औषधि दिखाई और सारी बात बताई, तो उसके मुँह से निकला, वो इंसान नहीं, कोई देवता है और उसकी दी हुई दवा ही हमारे मन की मुराद पूरी करने का कारण बनेगी। आज मेरे घर में दो फूल खिले हुए हैं।

हम दोनों पति-पत्नी हर समय आपके लिए प्रार्थना करते रहते हैं।

इतने साल तक कारोबार से फुरसत ही नहीं मिली कि स्वयं आकर आपसे धन्यवाद के दो शब्द ही कह जाता। इतने बरसों बाद आज भारत आया हूँ और कार केवल यहीं रोकनी पड़ी है। वैद्यजी, हमारा सारा

परिवार इंग्लैंड में सेटल हो चुका है। केवल मेरी एक विधवा बहन अपनी बेटी के साथ भारत में रहती है। हमारी भान्जी की शादी इस महीने की २१ तारीख को होनी है।

न जाने क्यों, जब-जब मैं अपनी भान्जी के भात के लिए कोई सामान खरीदता था, तो मेरी आँखों के सामने आपकी वह छोटी-सी बेटी भी आ जाती थी और हर सामान मैं दोहरा (Double) खरीद लेता था।

मैं आपके विचारों को जानता था कि संभवत: आप वह सामान न लें, किन्तु मुझे लगता था कि मेरी अपनी सगी भान्जी के साथ जो चेहरा मुझे बार-बार दिख रहा है, वह भी मेरी भान्जी ही है। मुझे लगता था कि ईश्वर ने इस भान्जी के विवाह में भी मुझे भात भरने की जिम्मेदारी दी है।''

वैद्यजी की आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गईं और बहुत धीमी आवाज में बोले, ''कृष्णलाल जी, आप जो कुछ कह रहे हैं, मुझे समझ नहीं आ रहा कि ईश्वर की यह क्या माया है?

आप मेरी श्रीमती के हाथ की लिखी हुई यह चिठ्ठी देखिये। ''और वैद्यजी ने चिट्ठी खोलकर कृष्णलाल जी को पकड़ा दी। वहाँ उपस्थित सभी यह देखकर हैरान रह गए कि ''दहेज के सामान'' के सामने लिखा हुआ था ''यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।''

काँपती-सी आवाज में वैद्यजी बोले, ''कृष्णलाल जी, विश्वास कीजिये कि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि पत्नी ने चिठ्ठी पर आवश्यकता लिखी हो और भगवान ने उसी दिन उसकी व्यवस्था न कर दी हो।

आपकी बातें सुनकर तो लगता है कि भगवान को पता होता है कि किस दिन मेरी श्रीमती क्या लिखने वाली हैं अन्यथा आपसे इतने दिन पहले ही सामान खरीदवाना आरम्भ न करवा दिया होता परमात्मा ने।

वाह, भगवान वाह! तू महान है, तू दयावान है। मैं हैरान हूँ कि वह कैसे अपने रंग दिखाता है।

वैद्यजी ने आगे कहा, ''जब से होश सँभाला है, एक ही पाठ पढ़ा है कि **सुबह परमात्मा का आभार करो, शाम को अच्छा दिन गुजरने का आभार करो, खाते समय उसका आभार करो, सोते समय उसका आभार करो।**

'शुक्र है मेरे मालिक'

'तेरा लाख-लाख शुक्रिया।'

कृतज्ञता से वैद्यजी की आँखों से आनंदाश्रुओं की धारा फूट पड़ी।

गीता परिवार

आलंदी में योगसोपान कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक ९ जनवरी को प्रमिला जी माहेश्वरी के अथक प्रयास से गीता परिवार, आलंदी में आयोजित योगसोपान कार्यक्रम में जयसिंगपुर गीता परिवार की टीम ने साहस संस्कार का प्रदर्शन किया। मल्लखम्ब, लाठी, काठी, तलवार बाजी, आसन आदि उपक्रम देख कर संपूर्ण आलंदी के सहभागी केन्द्र अत्यंत प्रसन्न हुए। इस कार्यक्रम में प.पू. स्वामीजी का सान्निध्य पाकर गीता परिवार, आलंदी धन्य हो गया। आलंदी में यह पहला ही उपक्रम था, स्वामी जी और संजू भैय्या की उपस्थिति से आलंदी का यह केन्द्र गौरवान्वित हो गया। प्रमिला दीदी ने गत ४० दिनों में आलंदी के अनेक आश्रमों और विद्यालयों् में जाकर गीता परिवार का परिचय, प्रसार और उनकी सहभागिता निश्चित करके १२०० बालकों को योगसोपान का प्रशिक्षण दिया और अब प्रशिक्षित सभी आश्रम के बालक नियमित रूप से स्वयं योगसोपान के आसन करते हैं। इस कार्यक्रम में आलंदी शहर की १७ संस्थाओं के ५०० बालकों को सम्मिलित किया गया। अनेक स्पर्धाओं का पारितोषिक वितरण समारंभ स्वामीजी के करकमलों द्वारा करवाया गया। उपस्थित सभी बच्चों ने गीता के १५ वें अध्याय का पाठ किया। इस कार्यक्रम का मंच संचालन पं. अशोक जी पारीक ने किया एवं विवेक गुरव ने आभार प्रदर्शित किया। पयासदान के साथ कार्यक्रम को विराम दिया।

संस्कार वाटिका के सुमनों ने सुरभित किये हजारों घर और परिवार

देश इस समय एक भीषण आपदा को झेल रहा है। किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा दिन भी आएगा कि पूरा देश महिनों तक घर के अंदर बन्द कर दिया जाएगा। सभी गतिविधियाँ रुक जाऐंगी। ऐसे समय में ही गीता परिवार के वार्षिक ग्रीष्मकालीन संस्कार वर्गों का समय भी आया। गत ३५ वर्षों से जो संस्कार साधना अनवरत चली आ रही थी उसमें कहीं भी आराम या विराम नहीं लिया गया था। फिर इस वर्ष क्या हम कुछ नहीं कर पाऐंगे? ऐसा प्रश्न हजारों कार्यकताओं के मन में था। कहते हैं कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। पूज्य स्वामीजी के साथ एक ऑनलाइन बैठक हुई और उसमें ये तय हुआ कि इस वर्ष यदि बच्चे हमारे पास नहीं आ सकते तो हम स्वयं बच्चों के पास जाएँगे। फिर क्या था! इंटरनेट के माध्यम से हर एक घर को ही संस्कार वर्ग और माता-पिता को कार्यकर्ता बना देने की अद्भुत मुहिम पर कार्य शुरू हो गया।

गीता परिवार के कार्यकर्ताओं ने **'संस्कार सुमन'** के पराग-कण इंटरनेट पर बिखेर दिए और एक संस्कार उपवन की रचना कर दी जिसका नाम रखा गया – ई-संस्कार वाटिका!

१८ राज्यों से १८ देशों तक का कार्य विस्तार

पूज्य स्वामीजी ने हमें यही सिखाया है कि हमारा संस्कार-कार्य हमारी भगवद-भक्ति की ही अभिव्यक्ति है। हमारे वर्गों में आने वाला हर एक बालक-बालिका श्रीकृष्ण का बाल-स्वरूप ही है और इसी भाव से हम अपने कार्यों द्वारा उनकी सेवा करते हैं।

इस बार हमने अपने बालकृष्ण के लिए एक वाटिका सजाई थी, प्रतीक्षा थी कि देश भर से हजारों रूपों में कृष्ण यहाँ भी आऐं अब आवश्यकता थी प्रचार कार्य की। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के संगठनों ने प्रचार-प्रसार की जिम्मेवारी उठाई। गीता परिवार की वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती निर्मला मारू जी के माध्यम से अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल और फिर अखिल भारतीय माहेश्वरी युवा संगठन भी इस कार्य में जुड़ गया। इन संगठन के कार्यकर्ताओं ने e-sanskarvatika के प्रचार का जिम्मा उठाया और पंजीकरण के पहले ही दिन कुछ ही घंटों में ४००० से अधिक बच्चों ने अपना पंजीकरण करवा लिया। केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेशों से भी पंजीकरण हो रहे थे। गीता परिवार का कार्य **भारत के १८ राज्यों तक** विस्तारित है और ई-संस्कार वाटिका में **भारत के अतिरिक्त १८ देशों से** बच्चों ने हिस्सा लिया। **कुल ३४००० पंजीकरण हुए।**

एक नई चुनौती

गीता परिवार जैसी संस्था देश में बहुत कम होंगी जो ३५ वर्षों से केवल और केवल बाल संस्कार कार्य के लिए कार्य कर रही है। गत ३५ वर्षों में समय भी बहुत बदल गया। बदलते समय के साथ नई-नई चुनौतियाँ भी आईं, बच्चों की रुचि बदल गयी किन्तु गीता परिवार का कार्य नहीं रुका क्योंकि हम बदलते समय के साथ स्वयं को बदलते रहे। बस एक बात नहीं बदली और वो है हमारी पंचसूत्री अर्थात् अपने विचार प्रणाली में, अपने सिद्धांतों के साथ किसी भी प्रकार का समझौता किये बगैर हम केवल अपनी कार्यप्रणाली को और भी विकसित करते गए।

ई-संस्कार वाटिका का ये उपक्रम अपने साथ नई चुनौती लाया था। संस्कार वर्गों में तो बच्चे दो घंटे के लिए केवल और केवल संस्कार वर्ग के लिए ही इकट्ठा होते हैं। घर से दूर एक वातावरण बन जाता है जिसमें बहुत से बच्चे मिलकर एक साथ गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं। वहाँ किसी प्रकार का कोई व्यवधान नहीं होता। खेल इत्यादि के माध्यम से बच्चों का मनोरंजन भी होता है। किन्तु घर में बच्चों को जोड़े रखना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। घर में TV है, मोबाइल गेम्स हैं, खेल-खिलौने हैं। ऐसे में क्यों एक बालक इतनी सारी चीजों को छोड़कर ४५ मिनट देगा संस्कार वाटिका के लिए? गीता परिवार के ३५ वर्षों के अनुभव की यह एक परीक्षा ही थी। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि जो बच्चे को हर दिन जुड़ने के लिए प्रेरित कर सके।

पाठ्यक्रम का विकास

आवश्यकता थी एक ऐसे पाठ्यक्रम की जो संस्कारप्रद तो हो ही साथ ही साथ इतने रुचिकर भी हों कि जो बच्चों को आकर्षक भी लगे। ऐसे कार्य देने की जो सरल भी हों किन्तु बच्चों को उसमें चुनौती पूर्ण कार्य करने का आनंद भी आये। इसी को ध्यान में रखते हुए – संस्कार कथा, आर्ट-क्राफ्ट, योग सोपान, परिवार संवाद, संस्कृत स्तोत्र, जिज्ञासा समाधान और पूज्य स्वामीजी के श्रीमुख से श्रीराम की कथा – इस प्रकार का एक पाठ्यक्रम विकसित किया गया।

संस्कार कथा

कहानियाँ बाल संस्कार का एक उत्तम साधन है। इससे बच्चों की कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है। जब किसी कहानी में किसी पेड़ के बारे में कहा जाता है तो सुनने वाले हर बच्चे की कल्पना में पेड़ अलग-अलग होते हैं। किसी का पेड़ इमली का होता है तो किसी का आम का तो किसी का बरगद भी हो सकता है। हर बच्चा अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर उस कहानी से जुड़ जाता है। कहानी सुनते समय वो स्वयं को उससे जोड़कर कहानी के मूल भाव में बहता जाता है। इसी से होता है संस्कार और यही एक कथाकार की सफलता है। गीता परिवार में अनेक कार्यकर्ता हैं जो इस कला में निपुण हैं किंतु रेखा दीदी मूंदड़ा की तो बात ही निराली है इसलिए संस्कार वाटिका में कथाकथन का कार्य उनको ही सौंपा गया। रेखा दीदी ने प्रतिदिन एक कथा प्रस्तुत कर परोपकार, मृदुवाणी, देशभक्ति ऐसे विभिन्न गुणों का बीजारोपण बच्चों में किया।

आर्ट-क्राफ्ट

बच्चे बहुत देर तक बैठे-बैठे केवल सुनने का कार्य नहीं कर सकते उनके हाथों को भी कार्य चाहिए। बच्चों के अंदर छिपी इसी रचनात्मकता को अवसर प्रदान किया सौ अनुराधाजी मालपाणी ने। प्रतिदिन एक नए क्राफ्ट के साथ अनुराधा भाभी आतीं और बच्चों को विस्मित कर देतीं। उनका वीडियो होता ५ मिनट का किन्तु बच्चे एक-एक घंटे तक कार्यमग्न रहते। लॉकडाऊन के समय में क्राफ्ट का चयन भी एक चुनौती थी क्योंकि ऐसे क्राफ्ट देने थे जिसकी सामग्री किसी भी घर में सरलता से उपलब्ध हों और बाजार से कुछ लाने की आवश्यकता न पड़े। अनुराधा भाभी ने ऐसे ही १५ क्राफ्ट्स का चयन किया। इस गतिविधि ने बच्चों की ऊर्जा को सृजन का आनंद दिया, एक सकारात्मक दिशा दी।

योग सोपान

घर पे बैठे-बैठे बच्चों की शारीरिक गतिविधियाँ बिल्कुल ही बंद जैसी हो गईं थीं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ये सही नहीं है। इसलिए योगासन का एक सत्र भी

इसमें सम्मिलित किया गया। ध्रुव ग्लोबल स्कूल के योग शिक्षक श्री मंगेश खोपकर और उनके सहयोगी श्री प्रवीण पाटील ने गीता परिवार के योग सोपान पाठ्यक्रम से ऐसे योगासनों का चयन किया जो वे आराम से घर में कर लें और जिससे उन्हें स्वास्थ्य लाभ भी हो। संस्कार सोपान में सिखाये गए योगासन बच्चे ही नहीं बड़े भी करते थे।

अमृतवाणी संस्कृत भाषा

संस्कृत के पाठान्तर से संस्कृत भाषा के प्रति उत्सुकता तो निर्माण होती ही है साथ ही वाणी का संस्कार भी होता है। किंतु ऐसे अनेक बच्चे हैं जिनकी वाणी को कभी संस्कृत में कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला। ऐसे बच्चे भी अपने घर पर संस्कृत पाठान्तर अवश्य करें, यही उद्देश्य था। इसके लिए शिवतांडव स्तोत्र का चयन किया गया। 'डमड्डुम डमड्डुमन निनादवड्डुमर्व्यम' ये बच्चों के लिए tongue twister जैसी एक चुनौती थी। और जब आदरणीया सुवर्णा काकी मालपाणी ने अपनी मधुर वाणी में इसका उच्चारण किया तो उसमें एक अलग ही लय और ताल का आनंद आ गया। बच्चे स्वयं ही पीछे बोलने लगे। परिवार के सदस्यों में भी इस बात की होड़ लग गयी कि कौन कितना स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण कर सकता है।

परिवार संवाद

आजकल बच्चे सोशल मीडिया पर तो घंटों चैटिंग कर लेते हैं किंतु प्रत्यक्ष अपने घर में बात करने से कतराते हैं। लॉकडाऊन का उपयोग परिवार-संवाद संस्कार के लिए हो तो इससे सुंदर क्या हो सकता था! इस समय सभी के पास समय भी था। बस आवश्यकता थी बच्चों को ऐसे विषय देने की कि जिस पर वे अपने घर के सदस्यों से संवाद साध सकें। गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी स्वयं ऐसे बाल मनोवैज्ञानिक हैं जिन्हें बच्चे और अभिभावक सभी के साथ संवाद साधने और उनके विषयों को समझने का दीर्घ अनुभव है। अपनी अद्भुत शैली में वे प्रतिदिन एक नया विषय लेकर बच्चों के सामने आते। भगवदगीता के एक श्लोक एवं प्रत्यक्षिकों के माध्यम से अपने विषय को बच्चों के सामने रखते। इसके बाद इसी विषय पर परिवार से संवाद साधने का कार्य 'गृहकार्य' के रूप में बच्चों को दे दिया जाता। अपनी गलतियाँ समझने की, माता-पिता के कार्यों में मदद की, कभी-कभी किसी कार्य के लिए 'ना' क्यों कहा जाता है ऐसे अनेक विषयों पर चर्चा हुई। ऐसी बातें जिन पर पहले बहस हुआ करती थी, बच्चों का रूठना-मनाना हुआ करता था, वो अब संवाद का साधन बन गया।

क्यों? – जिज्ञासा समाधान

आप बच्चों से माला लेकर नाम जप करने को कहें, वो पूछेंगे हम क्यों करें? आप कहिए कि तिलक लगाओ, वो कहेंगे ये तो मुझे अच्छा नहीं लगता। बच्चों की इन बातों से हम तुरन्त इस नतीजे पर पहुँच जाते हैं कि आजकल के बच्चे अपनी संस्कृति में रुचि ही नहीं रखते। सच तो ये है कि बच्चों के प्रश्न उनकी वास्तविक जिज्ञासा होते हैं। यह हमारी कमी है कि हम उनकी जिज्ञासा का समाधान नहीं कर पा रहे। इसलिए Tell me how? अर्थात बच्चों के मन में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर देकर उनका जिज्ञासा समाधान करना ये भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बना। श्री गोविंदजी माहेश्वरी ने अपनी सम्मोहित कर देने वाली वाणी में अत्यंत सरलता के साथ अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया।

संत संदेश

पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी ने जब गीता परिवार की स्थापना की तब अनेक वर्षों तक वे स्वयं प्रत्येक शिविर में उपस्थित रहते थे। तब के बच्चे

सौभाग्यशाली थे कि उन्होंने स्वयं पूज्य स्वामीजी से उपासना सीखी, उनके श्रीमुख से कथाएँ सुनीं। किन्तु आगे जाकर व्यस्ततावश बाल शिविरों में प्रतिदिन बच्चों के साथ रहना उनके लिए असम्भव होता गया। संस्कार वाटिका का सबसे बड़ा लाभ ये हुआ कि लगभग ३ दशकों के बाद ऐसा 'संस्कार शिविर' हुआ जिसमें बच्चों को पूज्य स्वामीजी का नित्य सानिध्य प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने इन १५ दिनों में श्रीराम की सम्पूर्ण जीवनगाथा कहानी के माध्यम से बच्चों के सामने प्रस्तुत कर उनके मानसपटल में अनेक दिव्य गुणों का बीजारोपण किया। घर में संतों का आगमन हो इसके लिए बहुत बड़ा सौभाग्य चाहिए और संस्कार वाटिका ने ३५००० घरों को ये सौभाग्य दिया कि पूज्य स्वामीजी अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक घर से संवाद साध रहे थे।

प्रश्न मंजूषा और वीडियो शेयरिंग

बच्चों का पंजीकरण तो उनके अभिभावकों ने कर लिया किन्तु ये भी आवश्यक था कि बच्चे नित्य-प्रतिदिन इस कार्य से जुड़े रहें और पूरा ध्यान देकर मनोयोग से प्रत्येक गतिविधि में हिस्सा लें। इसके लिए प्रतिदिन प्रस्तुत होने वाले विषयों पर एक प्रश्न मंजूषा प्रतियोगिता रखी गयी। कथा, योग सोपान, परिवार संवाद, जिज्ञासा समाधान और संत संदेश इन पांच विषयों पर आधारित एक एक प्रश्न प्रतिदिन दिए जाते थे और सभी प्रश्नों का सही उत्तर देने वाले बच्चों में से ५० प्रथम और ५० द्वितीय पुरस्कार से पुरस्कृत किये जाते थे। इस प्रकार १५ दिनों में १५०० बच्चों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

बच्चों से संवाद बनाये रखने के लिए, उनकी और अभिभावकों की प्रतिक्रिया जानने के लिए और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिये २५० से भी अधिक व्हाट्सॲप ग्रुप बनाये गए थे। इन सभी ग्रुप का संचालन गीता परिवार और माहेश्वरी महिला मंडल के सैकड़ों कार्यकर्ता कर रहे थे। प्रतिदिन बच्चे शिवताण्डव स्तोत्र की, क्राफ्ट के और योगासन करने के वीडियोस बनाकर अपने अपने ग्रुप में डालते थे। हम सभी कार्यकर्ताओं के लिए ये बड़ा उत्साहवर्धक होता था क्योंकि इससे बच्चों की सहभागिता का बोध भी होता था।

प्रत्येक घर बना संस्कार केंद्र

गीता परिवार के संस्कार वर्गों में बच्चे आते हैं, पालक नहीं। संस्कार वर्ग के बारे में अभिभावक उतना ही जानते हैं जितना बच्चे उन्हें बताते हैं। संस्कार वाटिका की एक खूबसूरती ये भी रही कि इससे गीता परिवार के कार्यों को अभिभावकों ने प्रत्यक्ष देखा। देखा ही नहीं बल्कि उसमें सम्मिलित भी हुए। जो कार्य केंद्र पर कार्यकर्ता बंधु-भगिनी करते हैं, लगभग वही कार्य घर-घर में प्रत्येक माता-पिता या दादा-दादी ने किया। इस उपक्रम ने प्रत्येक घर को एक संस्कार केंद्र और हजारों अभिभावकों को गीता परिवार का कार्यकर्ता बना दिया।

संस्कार वाटिका के इस नए उपक्रम ने गीता परिवार को यशोवर्धन मालपाणी जैसे अगली पीढ़ी के ऐसे कार्यकर्ता भी दिए जो तकनीक का उपयोग कर संस्कार कार्य को एक नए आयाम पर पहुंचा सकते हैं। ३५ वर्षों से जो संस्कार साधना अनवरत चली आ रही है उसे एक नई दिशा और नई दृष्टि प्राप्त हुई। गीता परिवार के कार्यकर्ताओं ने संस्कार वाटिका के सुरभित सुमनों की माला पिरोई और श्रीकृष्ण एवं भारतमाता को समर्पित की।

– श्री. गिरीश डागा
संगमनेर

आपदा अन्न सेवा

प्रत्येक वर्ष ग्रीष्म ऋतु के आने से पूर्व ही गीता परिवार के समस्त कार्यकर्ता बाल संस्कार शिविर की मानसिक तैयारी करने लगते थे कि किस प्रकार से अपने अपने क्षेत्रों में उत्तर रीति से कार्यकर्म किये जायें किन्तु प्रकृति ने इस वर्ष एक नये एवं कल्पना से परे भीषण दु:खद दृश्य का निर्माण पूरे विश्व के समक्ष खड़ा कर दिया। संपूर्ण मानव जाति कोरोना नामक महामारी से प्रभावित हो उठी। अपने देश में भी बसन्त ऋतु के प्रारंभ में ही इसका प्रभाव देखने को मिलने लगा और धीरे-धीरे इस महामारी ने पूरे देश को ही अपनी चपेट में ले लिया। नवरात्रों से पूर्व प्रशासन ने मार्च माह में संपूर्ण भारत वर्ष में लॉकडाउन की घोषणा जारी कर दी। एकाएक इस प्रकार की घोषणा से मानों पूरे देश के क्रियाकलापों पर ब्रेक लग गई और गतिशीलता का पहिया (Wheel) थम सा गया। स्थाई निवासी तो अपने अपने घरों में कुछ दिनों के लिए बंद हो गये किन्तु समस्या का सामना उन प्रवासी मजदूरों एवं सडकों की पटरी पर सोनेवाले, अस्थाई निवास बनाकर नित्य प्रति अपनी आजीविका को जुटाने वालों को करना पड़ा। धन के अभाव में ये अपना भोजन जुटाने में असमर्थ थे। प्रशासन ने अपने स्तर पर तैयारियाँ की भी और अभावग्रस्त लोगों की सहायता की किन्तु यह सब पर्याप्त नहीं था। पूरे देश में कम अथवा ज्यादा लगभग परिस्थितियाँ एक समान थी।

ऐसी विषम स्थितियों में गीता परिवार उत्तर प्रदेश की लखनऊ शाखा के कार्यकर्ताओं के मन में सेवाभाव का संचार उदित हुआ और गीता परिवार के उपाध्यक्ष डॉ. आशु गोयलजी के नेतृत्व में अभावग्रस्त लोगों में भोजन वितरण की योजना तैयार हुई। यह सारा कार्य कोई सामान्य नहीं था क्योंकि विषम स्थिति में समस्त नियमों का पालन करते हुए अपनी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखते हुए दूसरे लोगों की मदद करना जोखिम भरा कार्य था किंतु इन कठिन चुनौतियों को सहजता से स्वीकारते हुए समस्त कार्यकर्ताओं ने अपने अपने दायित्वों को उत्तम रीति से पूर्ण किया।

गीता परिवार एवं श्री दुर्गाजी मंदिर समिति, लखनऊ के परस्पर सहयोग से यह ६१ दिवसीय 'आपदा अन्न सेवा' महायज्ञ आयोजित किया गया, जिसका लाभ समाज के पीडित लोगों ने उठाया। २३ मार्च से २२ मई तक की गई इस सेवा में १५० से अधिक कार्यकर्ताओं ने अपना दायित्व निभाया। यह सेवा प्रतिदिन २१ घंटों तक चलती रही। सर्वप्रथम गीता परिवार के कार्यकर्ताओंने योजना के अनुसार लखनऊ महानगर में ५० चौराहों को चिन्हित किया, जहाँपर नित्यप्रति अन्न-जल सेवा प्रदान की गई। प्रवासी, मजदूर बंधुओंको अन्न-जल सेवा प्रदान की गई। कोरोना व्हायरस अन्न सेवा के अंतर्गत पुलिस, डॉक्टर एवं स्वास्थ्यकर्मी बंधुओं को प्रसादी प्रदान की गई। कोरोना व्हायरस रात्रि चाय सेवा १२ बजे से ३.३० बजे तक सुचारू रूप से की गई। सुदूर जरूरतमंदो को राशन किट सेवा प्रदान की गई। गौएं, कुत्ते स्ट्रीट डॉग एवं अन्य जानवरों को भी खाद्य सामग्री प्रदान की गई।

इस महायज्ञ में कुल भोजन के ४,०१,५०० पैकेट्स, पानी के पाउच एवं बोतल १,१०,००० वितरित किये गये। राशन किट्स २१००, ३०,००० कप चाय एवं बिस्किट ३०,००० पैकेट्स तथा ३०,००० ही नमकीन के पैकेट्स जरूरतमंद लोगों में बाँटे गए।

इस प्रकार से आपद काल में कार्यकर्ताओं ने बड़ी ही प्रसन्नता, अपनत्वभाव एवं सजगता से अपनी सेवाएं लखनऊ क्षेत्र में प्रदान की।

– श्री. शेखर वसिष्ठ

गुरु-शिष्य संबंध

जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रगति करने के लिए एवं नूतन विद्या में पारंगत होने के लिए गुरु का होना आवश्यक होता है। चाहे वह लौकिक मार्ग हो अथवा पारमार्थिक।

छात्रों के जीवन की बागडोर उनके गुरु के हाथों में होती है। ये गुरु पर निर्भर करता है कि वे अपने छात्रों के जीवन के रथ को किस दिशा में और कितना आगे बढा पायेंगे। सामान्य क्रम में अध्यापक पढाते हैं और छात्र पढते हैं। अध्यापक ज्ञान प्रदान करने का प्रयास कर रहे होते हैं और छात्र ज्ञानार्जन का। आवश्यकता तब प्रतीत होती है, जब उलझने निर्माण होती हैं। छात्र तनाव में आ जाता है, डिप्रेशन में चला जाता है। उसका मन उलझन में फँस जाता है, उसका मन भंवर में डोलने लगता है, वह कुंठाग्रस्त हो जाता है और कह सकता है कि, उसे अध्ययन नहीं करना। वह परीक्षा देने में असमर्थ है। ऐसी अवस्था में उसके भीतर आत्मविश्वास के जागरण की सर्वाधिक आवश्यकता होती है।

हमारी परंपरा में अध्यापक और गुरु में भेद माना जाता है। अध्यापक, शिक्षक, टीचर इन शब्दों में वह सब कुछ नहीं आता जो एक 'गुरु' शब्द में आ जाता है। टीचर तो शब्दों का ज्ञान देकर कोई भी बन सकता है किन्तु भारतीय परंपरा में गुरु एक अत्यंत पवित्र शब्द माना जाता है। वह मात्र शब्दों का ज्ञान देकर संतुष्ट नहीं होता अपितु विद्यार्थी के जीवन को संवारने की सतत चेष्टा करता रहता है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा की व्याख्या करते समय एक बडी सुंदर बात बताई कि जो संपूर्ण छात्र के भीतर छिपा हुआ होता है, उसे बाहर निकालने का कार्य करना ही शिक्षा का मूल अर्थ होता है। उस पूर्णताओं को प्रखर करने के लिए, उसके ऊपर जो आवरण आ गए हैं, केवल उनको दूर करने का कार्य गुरु को करना होता है।

एक उत्तम गुरु छात्र को यह बोध कराता है कि उसका कर्तव्य क्या है? वह छात्र को परीक्षार्थी न बनाते हुए ज्ञानार्थी बनाने का प्रयास करता है। वह छात्र के भीतर ज्ञान की भूख को जागृत करता है। उत्तम गुरु वह होता है जो अपने शिष्य को आत्मनिर्भर बना देता है। अब वह छात्र बिना किसी पर निर्भर किए आगे बढता जाएगा। उसका मार्ग वह स्वयं खोज लेगा। उसके साधन वह जुटा लेगा। इन सभी बातों को समझाने के साथ साथ गुरु छात्रों को इस बात के लिए भी सावधान करता है कि उनको अपने जीवन को संवारने के लिए अनुशासित और व्यवस्थित होना पडेगा। कोई भी छात्र यदि अपने जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहेगा तो उसे अपना जीवन व्यवस्थित भी रखना पडेगा।

गणित के क्षेत्र में श्रीनिवास रामानुजन एक जीवंत चमत्कार थे। किन्तु युवावस्था में ही एक सामान्य बिमारी से चले गये। डॉ. आंबेडकरजी ने कठोर परिश्रम करके ज्ञानार्जन प्राप्त किया लेकिन वे भी स्वास्थ्य अनुकूल न होने से समय से पहले ही चले गये। अपने स्वास्थ्य को ठीक रखना तथा दीर्घकालतक अपने शरीर की प्रत्येक शक्ति को संतुलित रीति से काम में लेना यह शिक्षा प्रदान करना भी गुरु का कार्य होता है।

कभी कभी छात्र पढना तो चाहते हैं किन्तु उनका मन लगता ही नहीं। ऐसी स्थिति में चित्त की

एकाग्रता के महत्व के बारे में समझाना भी गुरु का कर्तव्य बन जाता है। जब तक विद्यार्थियों के सामने एक निश्चित लक्ष्य नहीं होगा तो निश्चित रूप में ही उनका मन इधर-उधर विचलित होता रहेगा। उत्तम गुरु वह होता है जो अपने छात्रों के भीतर एक ऐसा सपना खड़ा कर दे जिसके कारण छात्र रात की नींद लेना भूल जाते हैं। जब इस प्रकार का कोई सपना अथवा लक्ष्य छात्र के सामने आता है तो रोज-रोज उसको यह नहीं बताना पड़ता कि उसे क्या करना है। उसके कदम स्वत: ही उस दिशा की ओर उठने लगते हैं। उसका दिमाग निरंतर अपने लक्ष्य की परिधि में घूमता रहता है और वह धुन ही उसको सफलता के मार्ग पर सहजता से ले जाती है।

एक उत्तम गुरु जानता है कि केवल पाठ्यक्रम की पुस्तकों को पढाकर वह छात्र को धन कमाने के योग्य तो बना सकता है किन्तु अच्छा इंसान नहीं बना सकता इसलिए उसके भीतर सद्‌गुणों का विकास निरंतर उत्पन्न होता रहे, उस ओर भी वह प्रेरित करता रहता है। महापुरुषों की कथाऐं सुनते सुनते निश्चित रूप में विद्यार्थियों के जीवन में परिवर्तन आता है।

– श्री. शेखर वसिष्ठ

वैश्विक महामारी के कारण कार्यक्रम निर्धारित है, निश्चित नहीं।

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम * ई. स. २०२०

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
०३-०९ से ०९-०९	मुंबई (प्रेमपुरी)	श्री दत्तपुराण कथा
११-०९ से १३-०९	सोलापुर (महाराष्ट्र)	वाग्यज्ञ
१८-०९ से २४-०९	उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
२५-०९ से ०१-१०	ढालेगांव (महाराष्ट्र)	श्रीराम कथा
०२-१० से ०८-१०	हैद्राबाद (आंध्रप्रदेश)	भागवत कथा
१०-१० से १६-१०	दिल्ली	भागवत कथा
१७-१० से २४-१०	पुणे (महाराष्ट्र)	नवरात्रि अनुष्ठान
२९-१० से ३०-१०	परभणी (महाराष्ट्र)	प्रवचन
०२-११ से ०८-११	सरदार शहर (राजस्थान)	महाभारत संदेश कथा
१०-११ से १६-११	पुणे (महाराष्ट्र)	दीपावलि पर्व

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क :– धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे– 411016
कार्यालय दूरभाष :- (020) 25652589 / 08275066572
Email : dharmashree123@gmail.com **Website : www.dharmashree.org**

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/१०/२०१९ से दिनांक ३१/१२/२०१९ तक)

✻ १ लाख एवं उससे अधिक ✻

पुणे: मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन, संतश्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, **जोधपुर:** मे. राजस्थान गम प्रा. लि., **कोलकाता:** मे. एस. आर. टेक्सटाईल्स प्रा. लि., मे. नवीन मरिको इंजी. प्रा. लि., मे. जे. जी होजिअरी प्रा. लि., मे. वेरीवाला ट्रस्ट, मे. डॉलर फौंउडेशन, मे. रुपा अँड कं. लि., **मुंबई:** मे. सी एफ एम प्रा. लि., मे. हरिहर चॅरि. ट्रस्ट, श्रीमती रत्नीदेवी काबरा चॅरि. ट्रस्ट, मे. दीनदयाल बियानी स्टॉक ब्रोकर्स लि., **चैन्नई:** टैग्रॉस केमिकल्स प्रा.लि., **अहमदाबाद:** श्री अध्यात्म विद्या मंदिर, **अंमळनेर:** श्रीमती रजनी केले

✻ रु. ५० हजार से १ लाख ✻

संगमनेर: श्रीमती कमलाबाई चांडक, **नागपुर:** श्री. पुरुषोत्तमजी रामदासानी, श्रीमती इला ठाकूर, **पुणे:** श्री. अरविंदजी नवगिरे, **हुगली:** श्री.विवेकजी अग्रवाल, **अहमदाबाद:** श्रीमती भावना त्रिवेदी, **परभणी:** मे. राजेश ट्रेडिंग कंपनी, **कोलकाता:** श्री.कोटरीवाला सेवा निधी, श्री. अशोकजी साबू, श्री. डमरुधरजी रावत **कानपूर:** श्रीमती रेखा कानोडिया, **दिल्ली:** श्री. राजेंद्र प्रसादजी अग्रवाल, श्री.ब्रिजमोहनजी अग्रवाल, श्रीमती सुनीता अग्रवाल, श्री. निशांतजी गुप्ता, श्री. राकेशकुमारजी गुप्ता, श्री. सुभाषजी तलवार **अहमदनगर:** मे. एपिटोम कॉंपोनटस् प्रा. लि.

✻ रु. २५ हजार से ५० हजार ✻

अहमदनगर: श्री. संतोषजी देसाई, **मुंबई:** श्रीमती कृष्णा एवं श्री. गुलझारीलाल मदान, श्री. राजेशजी रमेशचंद्र, **पुणे:** सौ. वेदिका कुलकर्णी, **चेन्नई:** मे. मायसन्स रेस्टॉरंट प्रा. लि., **बहादुरगढ़:** श्री. मुकेशजी गुप्ता

✻ रु. १० हजार से २५ हजार ✻

नागपुर: श्रीमती ओमेश्वरी वाघ, श्रीमती सुशीला मंत्री, श्रीमती स्नेहलता भैय्या, श्री. श्रवण कुमारजी जोशी, श्रीमती रंजना बैस, श्रीमती अनघा बेंद्रे, श्री. विजयजी शर्मा, **पुणे:** श्री. संतोषजी कुलकर्णी, श्री. जीतेंद्रजी कुलकर्णी, श्रीमती मीरा देशपांडे, श्रीमती पुष्पा कुलकर्णी, श्री. स्नेहलकुमारजी लढे, श्री. राधाकृष्णजी कुलकर्णी, श्री. छोगालालजी खण्डेलवाल, श्री. अनिलजी कवीश्वर, **जमशेदपूर:** श्री. संकलन, **चिखली:** श्री.विहारजी कोल्हेकर **धमतरी:** श्री.हरीशजी गांधी, श्री. मोहनलालजी गांधी **दिल्ली:** श्री. विवेकजी गुप्ता, श्रीमती शांतादेवी कौशिक, श्री. दिलीप कुमारजी गर्ग, **सोलापूर:** श्रीमती जयश्री कुलकर्णी, श्री. श्रीनिवासजी भुतडा, श्री निवास निधि, श्री. भूषणजी तिवाडी, मे. सह्याद्री एंटरप्राईजेस, मे. तृप्ती ट्रेडर्स, श्री. बालाप्रसादजी मुंदडा, मे. सिद्धेश्वर इंडस्ट्रीज, मे. मिणियार ॲड कं., श्री. गोवर्धनभाई चुन्नीलाल लाहोटी चॅरि. ट्रस्ट, श्री. नंदकिशारजी मुंदडा, श्री. सत्यश्यामजी तोष्णीवाल, श्री. राजेद्रजी घुली, श्री. गुप्ता ट्रेडिंग कार्पोरेशन, मे. व्हर्सेटाईल प्रीस्टेस प्रोडक्टस, मे. बलदवा एंटरप्राईजेस, श्री. आर. के. अग्रवाल, मे. ओम इंडस्ट्रीज, मे. पी. पी. पटेल ॲड कं., मे. मेहुल कन्स्ट्रक्शन प्रा. लि., **कल्याण:** श्री. विनायकराव कुलकर्णी **अहमदनगर:** श्री. राजेशजी झंवर, श्री. श्रीकुमारजी सोनी, श्री. पुरुषोत्तमजी पटेल, श्रीमती मंगाबाई पटेल, श्री. ओमप्रकाशजी सिकची, श्री. संतोषजी देसाई **मुंबई:** मे. व्ही. पी. बेडेकर अँड सन्स प्रा. लि., **अहमदाबाद:** मे. लूनार इलेक्टिक्स प्रा. लि., डॉ. श्री. बी. आर. धूत, श्री. विशालजी देसाई, श्रीमती राधिका पारिख, श्रीमती जयश्री मश्रुवाला, श्रीमती नंदाबेन के. मश्रुवाला, श्री. महेंद्रजी पी. लालानी, श्री. जयंत कुमारजी व्यास, श्रीमती मीनाक्षी पटेल, श्री. गौतमजी मेहता, डॉ. श्री. अमूल्य सेटलवाड, **बंगलौर:** श्री. हेमंतजी गोरे, **कोलकाता:** श्रीमती मालविका मुखर्जी,श्री. कालूराम पेडिवाल जनकल्याण ट्रस्ट, श्री. केशवजी कयान, **सहारनपूर:** श्री. शिवाशीषजी गुप्ता, **गंगटोक:** श्री. ओमप्रकाशजी थिरानी

✻ रु. ५ हजार से १० हजार ✻

पालघर: श्री.हिमांशुजी चिंचणीकर, **सोलापूर:** श्री. सुनीलजी परदेशी, श्री.कुमार मोहाले, श्री. पांडुरंगजी कुलकर्णी, मे. चाटला टेक्स्टाईल इंडस्ट्रीज, श्रीमती साधना डागा, श्रीमती सुलभा माढेकर,श्री. सुरेशजी बिटला, श्री.मधुकरराव फडणवीस, **नागपुर:** श्री. योगेंद्र कुमारजी शर्मा, श्रीमती लक्ष्मी यादव, श्री. मोहितजी साहू, श्री. मनीषकुमारजी साहू, श्रीमती रेखा चतुर्वेदी, श्री. नारायणजी बाजोरिया, श्री. अशोकजी बागलकोटे, श्री. एस. पी. रंगारे, श्री. नारायणजी मणियार, श्रीमती मीना कुलकर्णी, **पुणे:** श्रीमती पुष्पा उपाध्ये, श्रीमती सुजाता कवडे, श्री. अशोकजी जोशी, श्री.दीपकजी भुतडा, श्री.महेशजी बनकर, श्री.नरेंद्रजी भेडा, श्री. रामचंद्रजी वाघ, श्रीमती मनीषा जोशी, श्रीमती मंजुला मालपाणी, श्री. सुबोधकुमारजी शर्मा, श्रीमती मयूरी खेडकर, श्री. रेवाशंकरजी जोशी, **मुंबई:** श्री. हरिजी जोगवेकर, श्रीमती नीलम पाठक, श्रीमती वत्सला गणेश , **दिल्ली:** श्रीमती नीता टंडन, **अहमदाबाद:** श्री. हरीशजी दवे, श्री. हसमुखजी दवे, श्रीमती अरुणा वणीकर, श्रीमती स्वामिनी, श्री. एन. के. पाठक, श्री. शैलेशजी दवे, श्रीमती मनीषा राठी, श्रीमती नयना बेन बटेका, श्री. कपिल व्यास, श्री. शिरीष निर्मल **मंडोली:** श्री. हर्षदभाई ठक्कर, **इंदौर:** श्रीमती रेवा ओदक, **अमरावती:** श्रीमती भूमिका देशमुख, **परभणी:**श्री. दीवाणजी अंबोरे, श्रीमती उषा धानोरे, श्री. भास्करजी मोकाशी, श्री. महेशजी सोनी, **कोलकाता:** श्री. सीतारामजी अग्रवाल, श्रीमती अंबिका, **गाझियाबाद:** श्री. गोपालदासजी अग्रवाल, **शालेज:** श्रीमती जयश्री ठाकर, **अहमदनगर:** श्री. मावजी दिवानी, श्री. जितेशजी पटेल, श्री. जेठालालजी पटेल, श्री. मानजीभाई पटेल, श्री. जिवराजजी पटेल, श्री. भरतजी पटेल, श्री. खिमजीभाई पटेल, श्री.लखमसीभाई पटेल, श्री. कांतीलालजी पटेल, **गंगटोक:** श्रीमती रामूबाई मिमाणी, **अकोला:** श्रीमती प्रमिला जायस्वाल, **सातारा:** श्री. संतोषजी गाडे,

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०१/२०२० से दिनांक ३१/०३/२०२० तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

हैदराबाद: श्रीमती ऐश्वर्या दायमा, श्री. कमल नारायण भांगडिया (एच.यू.एफ.), श्री. जी. निरंजन रेड्डी, श्रीमती शारदादेवी राजगोपाल परतानी चॅरि. ट्रस्ट, **पुणे:** मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन, श्री. विजयजी वसंत कुलकर्णी, श्री. भगतसिंहजी बनाफर, **नागपुर:** श्री. अविनाशजी संगमनेरकर, **कोलकाता:** श्रीमती आशादेवी साबू, श्री. अनुरागजी साबू, मे. जे. जी होजियरी प्रा. लि., मे. प्राईमआर्क रिटेल स्टोर्स प्रा. लि., श्री. चितलांगिया चॅरि. ट्रस्ट, **अहमदनगर:** श्री. राधेश्यामजी बूब, **संगमनेर:** गीता परिवार, **बेलगांव:** कु. अस्मिता पवार, **मुंबई:** मे. प्लास्टिब्लेंडस इं. लि., श्री. भागीरथजी लड्डा, मे. मरुधर फॅशन्स, मे. ब्राईट स्टार इन्व्हेस्टमेंट्स, मे. चार्टड फायनांस मॅनेजमेंट लि., मे. आर. आर. केबल्स लि., मे. सी.एफ.एम. अॅसेट रिकॉन, मे. आनंदजी राठी इन्शुरंस ब्रोकर्स, **सेलु:** मे. बिहाणी अॅग्रो इंड. प्रा. लि., **सोलापुर:** श्री. सिद्धेश्वर इंडस्ट्रीज, मे. पी. पी. पटेल अँड. कं., मे. श्री. आनंदजी राठी इन्सुरन्स ब्रोकर्स, **नॉयडा:** श्री. विभवजी सराफ, **औरंगाबाद:** श्रीमती पद्मा तापडिया, **दादरा:** मे. रामरत्ना वायर्स लि., **वाघोदिया:** मे. एम. ई. डब्ल्यू. इलेक्ट्रिकल्स लि., **पानिपत:** श्री. अमितकुमारजी गोयल, **जोधपुर:** मे. श्रीराम कोलॉईडिस प्रा. लि.

रु. ५० हजार से १ लाख

हैदराबाद: श्रीमती सुनीता दायमा, मे. धनलक्ष्मी रोटो स्पिनर्स लि., श्रीमती लक्ष्मी व्यास, **कोलकाता:** श्री. अशोककुमारजी साबू, मे. कालूराम पेरिवाल जनकल्याण ट्रस्ट, **जालना:** मे. साई डायग्नॉस्टिस, **पुणे:** श्री. सुजीतजी देशमुख, **हुगली:** श्री. विवेकजी अग्रवाल, **सेलु:** श्री. किरणजी बिहाणी, श्रीमती शीतल बिहाणी, श्रीमती सावित्री बिहाणी, श्रीमती कमला बिहाणी, श्री. धनंजयजी बिहाणी, श्री. जयप्रकाशजी बिहाणी, श्री. अविनाशजी बिहाणी, श्री. विजयकुमारजी बिहाणी, **अहमदनगर:** श्री. रमेशचंद्रजी असावा (एच.यू.एफ.), **काचिगुडा:** श्री. गोविंदप्रसादजी चांडक,

रु. २५ हजार से ५० हजार

हैदराबाद: श्रीमती निधी व्यास, श्री. हीरानंद रामसुख चॅरिटीज, **जोधपुर:** श्री. दशरथमलजी खिंवेसरा, **पुष्कर:** श्री. दिनेशजी दीवान,

रु. १० हजार से २५ हजार

हैदराबाद: श्रीमती रामेश्वरी तिवारी, श्री. हरिनारायणजी व्यास (एच.यू.एफ.), श्री. व्यास परिवार, श्री. कैलाश नारायणजी भांगडिया, श्री. पृथ्वीराज दरक, श्री. श्रीकृष्णजी जोशी, श्री. जोशी परिवार, श्री. रामजी परिवार, श्री. गोपालजी गोस्वामी परिवार, श्रीमती दीपाली दुबे, **पुणे:** श्री. स्नेहलजी लढे, श्री. वृषलजी मणियार, श्री. महेशजी नंदे, **देहरादून:** श्री. विवेकजी शर्मा, **नई दिल्ली:** श्री. परवेशजी बग्गा, श्री. परीक्षित वशिष्ठ, श्री. सुधीरजी ग्रोव्हर, श्री. अनिलजी टंडन, **अहमदाबाद:** श्रीमती अनिलाबेन दलाल, श्री. गोपीकृष्णजी शर्मा, **कोलकाता:** श्री. केशवप्रसादजी कयान, **सूरत:** श्रीमती सावित्री मालपाणी, **जयपुर:** श्री. बनवारीलालजी मारु, **अकोट:** श्री. राजकुमारजी चांडक, **जालना:** श्री. रामेश्वरजी होलानी, श्री. श्रेयसजी राधेश्याम, मे. वरेण्यम योगा क्लासेस, **सिकंदराबाद:** श्री. सोंथलिया परिवार, **अहमदनगर:** मे. जिलामित्र इलेक्ट्रो इंजि., मे. सौरभ कन्स्ट्रक्शन, श्री. राजरतनजी झंवर, मे. वैष्णवी इलेक्ट्रिकल्स, मे. राजा रबर अँड हायड्रॉलिक्स, मे. झालानी एजन्सीज, मे. इंटरनॅशनल अॅग्रि. इंडस्ट्रीज, **जबलपुर:** मे. जामदार हॉस्पिटलस् प्रा. लि., **मुंबई:** श्रीमती उषा गुप्ता, **औरंगाबाद:** श्री. श्रीधरजी वेलंगी, मे. एम. आर. हुंडीवाला अँड. कं., श्रीमती साधना जाजू, श्री. सत्यनारायणजी जाजू, श्री. निखिलजी जाजू, **सोलापुर:** गंगामाई हॉस्पिटल,

रु. ५ हजार से १० हजार

जालना: श्रीमती उषा दायमा, **दिल्ली:** श्री. जगदीशचंद्रजी गुलाटी, डॉ. रजनी शर्मा, श्रीमती शशिबाला शर्मा, **गांधीधाम:** श्री. बालकृष्णजी जोशी, **नागपुर:** श्री. विश्वनाथजी पांडे, श्री. कृष्ण कजेरिया, **मुंबई:** श्री. पंकजाक्षन नायर, **हैदराबाद:** श्री. सुनीलजी सोमाणी, श्रीमती कविता जोशी, श्री. पुसारामजी प्रजापती, श्री. सूर्यकांतजी कुलकर्णी, श्रीमती अवंतिका मोहन, श्री. शशिकांतजी जालान, श्रीमती ममता गर्ग, श्री. उमाकांतजी गर्ग, श्री. चंद्रकरणजी गर्ग, श्री. प्रकाशजी गर्ग, श्री. शंकरलालजी आचार्य, **जबलपुर:** श्री. घनश्यामदासजी सुहाने, **जोधपुर:** श्रीमती उषा अवस्थी, श्री. महेंद्रकुमार दाधीच, **जयपुर:** श्रीमती लक्ष्मी शर्मा, **अजमेर:** श्री. शैलचंद्रजी व्यास, श्री. दत्तात्रयजी बंबाडकर, श्री. चंद्रेशजी सांखला, **पुष्कर:** श्री. रूपसिंहजी राजपुरोहित, **गंगाखेड:** श्री. भास्करराव मोकाशी, **कोलकाता:** श्रीमती मालविका मुखर्जी, **पटियाला:** श्रीमती मंजू बंसल, श्रीमती मीनू बंसल, **सिकंदराबाद:** श्रीमती सुमन सोंथलिया, **वारंगल:** श्री. हरिनारायणजी मालाणी, **अहमदनगर:** श्री. शरदजी झंवर

प्रकाशोत्सव झांकियाँ ।

धुलिया वेदविद्यालय में श्री. केले काका द्वारा पूजन

पुष्करराज में मारु परिवार द्वारा तुलादान

कोलकाता वेदविद्यालय में पूजन करते हुए

वेदविद्यालय में छात्रों द्वारा पूजन

2020/1/20 09:39

वेदविद्यालय में छात्रों द्वारा पूजन

पुष्करराज वेदविद्यालय में पूजन

"DHARMASHREE" Periodical - Quarterly
Posted under P.O. clause No. 129 Regn. No. MAHHIN/2001/4041

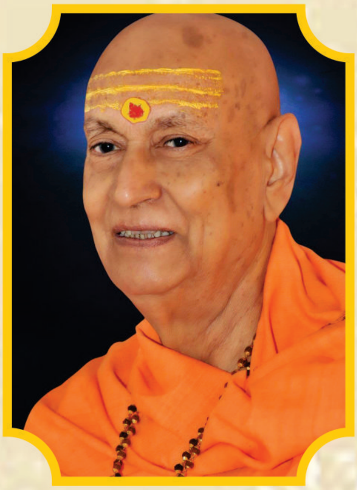

प्रात:स्मरणीय पूज्यपाद श्री गुरुदेव पद्मभूषण

स्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज

निवृत्त शंकराचार्य,
संस्थापक :- भारतमाता मंदिर, समन्वय सेवा ट्रस्ट (हरिद्वार)
की प्रथम वार्षिक समाराधना पर्व पर

❁ भावप्रसूनाञ्जलि ❁

सद्‌गुरुवर की पुण्यस्मृति में
अविरल बरस रहे हैं नैन ।
विरहानल-संतप्त चित्त है
समझाने पर भी बेचैन ।।१।।

भूल नहीं सकता मैं वह दिन
गंगातटपर संत सभा में
अमृतमय वाणी से अपनी
सद्‌गुरु बोले शुभ शब्दों में ।। २ ।।

"गंगाजी के पावन तटपर
जप तप पुण्य किया जो अर्जित ।
जीवन-भर का वह साधन-फल
प्रिय गोविंद गिरी को अर्पित!" ।।३।।

शिष्य अकिंचन देख आपने
हे दाता! यह दान दिया।
इससे बढ़िया प्रसाद अबतक
कौन गुरुने किसे दिया? ।। ४ ।।

सर्वोत्तम अक्षय प्रसाद यह
साधक जीवन का आधार ।
वत्सल वरदहस्त मस्तकपर
कल्पलता श्रीगुरुका प्यार ।। ५ ।।

स्वामी गोविंददेवगिरि:

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना, पुणे - ४११००४ में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया ।
संपादक - डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण सदस्यों के अतिरिक्त. प्रसाद - मूल्य प्रति अंक रू. ५/- मात्र।